मनुष्य बनो

मई जून
१९८७

वा० मू०
१२.००

शरणागति

शुभ संकल्प०

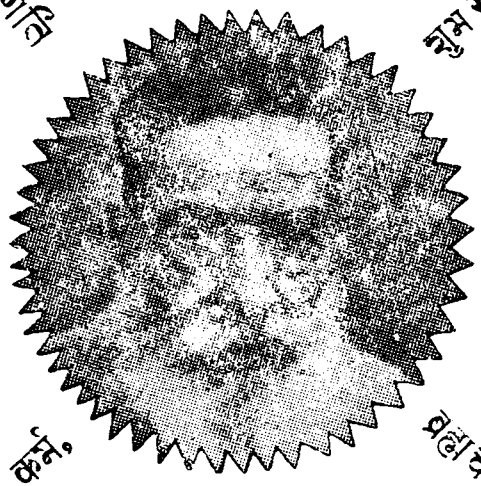

क्षमा०

प्रेम०

निष्काम कर्म०

ब्रह्मचर्य पालन०

लेखक
लाल फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम,सभ्यता,आदर, शिष्टाचार,सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल,सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायेगा।

४—किसी धर्म पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ-साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य १२-०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहाँ डाकखाने से पूछताछ करके वहाँ से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजनी चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

—प्रकाशक

R.S.

ओ३म पूर्णमद पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३७ | मई १९८७ | अङ्क ८

प्रार्थना

करम भोग अति कर सहे, पाया विपति कलेश।
दाता अब तो दया कर, पहुंचूं सत के देश॥
काल करम व्यापे नहीं, मिटे मोह संसार।
सहजे ही भव सिंध से, कर बेड़े को पार॥
ज्ञान ज्ञान का ज्ञान तू, ध्यान ध्यान का ध्यान।
तेरी कृपा महान से, छूटे सब अज्ञान॥
तुझ में बल और शक्ति है, तू है शक्तिवान।
अपने बल और शक्ति से, मेरा लगादे ठिकाना॥
राधास्वामी आदि गुरु, अब कर मेरी सहाय।
सुरत बहिरमुख ना रहे, अन्तरमुख बन जाय॥

गतांक पृष्ठ १२ से आगे

फकीर बाबा सदैव इस बात पर ज़ोर देते है कि मनुष्य अपने परम लक्ष्य को समझे और चमत्कारों के चक्कर में आ कर रास्ते में ही न भटक जाये। मनुष्य का परम लक्ष्य सब प्रकार के चमत्कारों से परे सच्चे ईश्वर को प्राप्त करने का है। जब तक मनुष्य चमत्कारों के प्रभाव से परे नहीं जाता वह जन्म मरण के बन्धन से छूट नहीं सकता। चमत्कार दो प्रकार के होते हैं। अनायास तथा वास्तविक।

अनायास अर्थात अचानक घटने वाले चमत्कार बिना किसी मन को एकाग्र करने की कोशिश के घटित हो जाते है, क्योंकि ऐसी अवस्था में मन अन्ध विश्वास के कारण क्षण भर के लिए एकाग्र हो जाता है। भविष्यवाणी, दूसरों के मन की बात को जान लेने, पानी पर चलने आदि के चमत्कार आमतौर पर वास्तविक प्रकार के ही होते है, किन्तु कभी-कभी ऐसे अनुभव मन के आन्तरिक अभ्यास के बिना भी घटित हो जाते हैं, तब ऐसे अनुभवों को अनायास प्रकार के चमत्कार के कारण ही लोगों में अन्ध विश्वास और कट्टरता बढ़ती है। इस प्रकार के घटने वाले चमत्कार क्योंकि अचानक में घट जाते हैं इनमें लोगों का विश्वास टूट भी जल्दी सकता है। क्योंकि किसी भी मनुष्य की सभी इच्छाएं हर समय पूरी नहीं होतीं। जब ऐसे व्यक्ति जो अचानक चमत्कारों का अनुभव करते हैं, उस समय तो प्रसन्न हो जाते हैं, परन्तु जब कभी उनकी इच्छाएं पूरी नहीं होती तो उनका अपने विशेष देवता या गुरु से विश्वास उठ जाता है। मनुष्य को सच्ची शान्ति और सच्चा ज्ञान तभी मिल सकता है, जब उसका मन पवित्र हो। ईश्वर व गुरु के रूप में केवल अंध विश्वास रखने से मन की पवित्रता नहीं आती। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह योग, समाधि, ध्यान इत्यादि का अभ्यास चमत्कारों का अनुभव करने के लिए नहीं बल्कि मन की पवित्रता को प्राप्त करने के उद्देय से करे। मन की पवित्रता मानव धर्म के नियमों का पालन करने से आ सकती हैं।

जब व्यक्ति चमत्कारों से ऊपर उठ जाने के लक्ष्य को सामने रखता है; जब वह ऐसी घटनाओं को साधना का जरूरी अंग नहीं मानता और जब वह मानवता धर्म मन की शुद्धि के लिए करता है, उसे चमत्कारों के रूप का सच्चा ज्ञान हो जाता है तो उसकी तथा कथित चमत्कारी घटनाएँ अचानक घटित नहीं होती वे वास्तविक प्रकार की होती है। यही कारण है कि संसार के हर कौने में सन्तों के सम्बन्ध में रोगों के दूर होने और भविष्य आदि की घटनाएँ घटित होती रहती है। सच्चा सन्त वही होता है, जिसको चमत्कारों के वास्तविक रूप का ज्ञान होता है। वह जानता है कि तथा कथित चमत्कार सभी ईश्वर के कारण ही घट रहे है वह तो केवल निमितमात्र ही है। जब कोई महात्मा अथवा सन्त चमत्कारों से प्रभावित न हो कर मनुष्य के परम लक्ष्य को ही अथवा धर्म समझता है, वह स्वयं भी पूर्णता को प्राप्त करेगा और साथ ही साथ दूसरों को पूर्णता की ओर ले जायेगा। ऐसे योगी जो लोगों में नाम पाने के लिए या धन कमाने के लिए या लोगों को चमत्कार दिखाने के लिए साधना करते हैं वे कभी जीवन मुक्त के लक्ष्य को नहीं पा सकते। फकीर बाबा ने किस प्रकार चमत्कारों से ऊपर उठ कर जीवन मुक्ति के स्तर को प्राप्त किया है' इसकी व्याख्या अगले अध्याय में की जायेगी।

फकीर बाबा की संक्षिप्त जीवनी

हजूर मानव दयाल जी महाराज

पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि ईश्वर अनादि और अनन्त है। मानवयात्रा का अनेक धर्मों और मत-मतान्तर में बंट जाने का एक विशेष कारण यह है कि ईश्वर और उसके रूप की अनन्तता की ओर ध्यान नहीं दिया गया। सारे ब्रह्माण्ड में यह पृथ्वी एक छोटा सा ग्रह है और ब्रह्माण्ड ईश्वर की शक्ति की एक बूंद से ही निकला है। हम इस, पृथ्वी पर रहने वालों को पैगम्बरों, ऋषियों और सन्तों के द्वारा ईश्वर का आंशिक ज्ञान, इतिहास के आरम्भ से ही मिलता रहा है। ईश्वर का पूरा ज्ञान आज तक किसी को नहीं मिला और न ही मिल सकता है, क्योंकि ईश्वर अनन्त है और उसका ज्ञान भी अनन्त है। जो लोग यह दावा करते हैं कि उन्हें ईश्वर का पूरा ज्ञान है, ये सही नहीं हो सकते। फकीर बाबा अपने हर सत्संग और लेखों में इसी पर जोर देते है कि उनका ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान अन्तिम या पूर्ण है और न ही आज तक कोई व्यक्ति पैदा हुआ है जिसे अनन्त ईश्वर के ज्ञान का पूरा पता चला हो। फकीर बाबा कहते हैं कि मनुष्य को मानव धर्म का पालन करते हुए, मन को शुद्ध रखते हुए, अपने धर्म का पालन करते जाना चाहिए। धर्म के सन्दर्भ में उनका दृष्टिकोण अनेकत्व का न हो कर एकत्व का है. इसलिए ही तो उन्होंने अपने धर्म का नाम मानवता धर्म रखा है और अपने आश्रम का नाम मानवता आश्रम। धर्म की संकीर्णता ने मनुष्य जाति को टुकड़ों २ में बाँट दिया है, इसलिए फकीर बाबा कहते हैं हमें इस तंगदिली के धर्म से ऊपर उठना चाहिए। उनके विचार स्वामी विवेकानन्द के इस वाक्य की पूर्ति करते हैं। -किसी विशेष धर्म में पैदा होना पाप नही है, किन्तु उसी की सीमा में ही मर जाना मूर्खता है।

फकीर बाबा का जन्म एक सत् पुरुष के रूप में हमारे समय की आवश्यकता के अनुसार हुआ है। भगवदगीता में कहा गया है कि ईश्वरीय शक्ति समय के अनुसार विशेष प्रकार के अवतार का कारण बनती है। फकीर बाबा का जन्म सचमुच ही हमारे समय की आवश्यकताओं के अनुसार हुआ है वह अनेक बार कहते हैं, 'मैं सत्य का अवतार हूँ।' ये शब्द सम्भवतया उनके अन्तस् से ही निकलते हैं; जिनका सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व के उस अंग से है, जिसे मूल आधार या दयाल कहा गया है। यह तत्व न मरता है, न जन्म लेता है, वास्तव में यही अविनाशी तत्व सारी कुदरत का स्वामी है। फकीर बाबा स्वयं अपनी जीवनी की संक्षिप्त व्याख्या देते हुए लिखते हैं :—

'मैं पंझाल नामक गाँव मे १८ नवम्बर १८८६ में पैदा हुआ। यह तो भौतिक जन्म का हवाला है वास्तव में तो मैं अविनाशी हूं, जन्म मरण से परे।'

फकीर चन्द का हिन्दी में शाब्दिक अर्थ है संन्यासी तथा उर्दू में साधु का प्रकाश। आम तौर पर लोग अपनी सन्तान को ऐसे नाम देते हैं जिनका सम्बन्ध धन, सम्पत्ति, शक्ति अथवा यश से हो। परन्तु फकीर का मतलब तो वह व्यक्ति होता है, जिसके पास धन, सम्पत्ति तथा यश कुछ भी नहीं होता, जिसने संसार की वस्तुओं का त्याग कर दिया हो। ऐसे लगता है कि, फकीर बाबा के माता पिता ने उनका नाम अचानक फकीर नहीं रखा था बल्कि प्रकृति इस नाम के द्वारा बालक के प्रति भविष्य वाणी करा रही थी। बालक फकीर बचपन से ही एक फकीर स्वभाव के थे। उनके इसी नाम के कारण ही फकीर बाबा के पूज्य गुरु दाता दयाल श्री शिवव्रत लाल जी महाराज ने जो कि एक उच्च कोटि के विद्वान् तथा कवि थे, फकीर बाबा पर ज्ञान से भरपूर अनेकों ऐसी कविताएं लिखीं, जिनमें अति गूढ़ तत्व है। इन कविताओं का 'फकीर भजनावली नाम्क पुस्तक मे संकलन है, जो पढ़ने योग्य है। दाता दयाल ने इस भावी सद्गुरु के विषय में यह

यह कहा था कि यह महान् आत्मा वास्तव म परम तत्व है, जिसने फकीर का रूप इसलिए धारण किया है कि वह दुःखी जीवों को परम धाम की ओर ले जाये १६२१ में दाता दयाल ने फकीर चन्द को असली फकीर बनने का उपदेश देते हुए लिखा था :—

'तू फकीर बन, तू फकीर बन;
तू फकीर बन भाई !
मैं भी तरूं फकीर चरण लग;
फकीर महा सुख दाई ।
मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक;
ईश ब्रह्म नहीं जानूं ।
मैं हूं नाम फकीर दीवाना;
सब से बढ़ कर मानूं ।।;

अपने नाम के अनुसार ही बालक फकीर चन्द में शुरू से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति थी । सात वर्ष की छोटी सी आयु में ही ईश्वर की खोज में लग गये । ब्राह्मण वंश में पैदा होने के नाते तथा अपने माता को नित्य पूजा पाठ करते देखते हुए कोई भी बालक पूजा पाठ की ओर आकर्षित हो सकता है । ऐसा प्रायः पुरोहितों के बच्चों के साथ होता है । परन्तु फकीर चन्द के पिता जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी व्यवसाय से पुरोहित नहीं थे, बल्कि एक सिपाही थे । फकीर बाबा अपने पिता के विषय में लिखते हैं । 'मेरे पिता जी का स्वभाव कुछ तो सिपाही के नाते ओर कुछ घर की माली हालत अच्छी न होने के कारण सख्त था और वह परिवार के साथ सख्ती का व्यवहार करते थे । बालक फकीर चन्द पिता के इस कठोर शासन से राहत पाने के लिए ईश्वर भक्ति की ओर लग गये । उनकी माता एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं । वह नित्य प्रति अपने परिवार के ठाकुरों की बड़ी श्रद्धा से पूजा किया करती थीं । बालक फकीर चन्द अपनी माता को रोज ठाकुरों की पूजा करते हुए देखते थे, परन्तु उनकी अपनी पूजा केवल कर्मकाण्ड

तक ही सीमित नहीं थीं। वह छोटी सी आयु में भी ईश्वर की पूजा मानसिक रूप से करते थे। उन्होंने रामायण और महाभारत को कई बार पढ़ा। इन ग्रन्थों से प्रभावित होकर वह भगवान् के अवतार राम तथा कृष्ण से बहुत प्रभावित हुए और उनके साक्षात् दर्शन करने की लालसा बालक फकीर में प्रबल हो उठी।

फकीर चन्द जी की माता कई बार ठाकुरों की पूजा का भार बालक फकीर को सौंप देती थीं किन्तु बालक फकीर ठाकुरों को नहलाने टीका लगाने तथा सजाने के स्थान पर उनकी पूजा मन से ही कर लेते और माता को कह देते कि उन्होंने ठाकुरों की पूजा तथा अभिषेक कर दिया है। परन्तु माता यह शिकायत करतीं कि बालक फकीर झूठ बोलते हैं, क्योंकि ठाकुरों पर धूल जमी हुई होती थी, इससे यह प्रमाणित होता था कि उनको नहलाया नहीं गया। किन्तु बालक फकीर चन्द सदा यह कहते थे कि उन्होंने ठाकुरों की असली पूजा की है।

किशोर फकीर चन्द ने भगवान् राम तथा कृष्ण के साक्षात् दर्शन किये और कई चमत्कारी घटनाओं का अनुभव किया। परन्तु ऐसे २ असाधारण अनुभवों के होने के बाद भी वह निरन्तर साधना मे लगे रहे और परम तत्व के आधार को ढूँढ़ने के यत्न में लगे रहे। सच्चे ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में जो उन्हें अनुभव हुए, वे बिना बड़े २ ग्रन्थों के पढ़े ही हुए।

फकीर बाबा की शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही रही, और यह शिक्षा उन्होंने पंजाब के जिला जेहलम के एक कस्बे पिण दादन खान जो अब पाकिस्तान में है) में पाई। उनके पिता उस समय महकमा रेलवे की पुलिस में वहीं काम करते थे। घर की माली हालत अच्छी न होने के कारण वह फकीर चन्द को ऊँची शिक्षा नहीं दिला सके। इसी कारण किशोर फकीर चन्द ने १९०४ में भारतीय रेलवे के कन्स्ट्रक्शन विभाग में सिगनेलर के पद पर काम करना आरम्भ किया।

वह बड़े ही परिश्रमी थे' अपने खाली समय में वह पास वाले रेलवे स्टेशन पर जा कर, वहाँ के तार बाबू की देख-रेख में तार भेजने की कला का अभ्यास करते थे। इस शिक्षा के कारण थोड़े ही समय में उन्हें भारतीय रेलवे विभाग में सहायक स्टेशन मास्टर नियुक्त कर दिया गया। शीघ्र ही अपनी ईमानदारी तथा मेहनत के कारण वह स्टेशन मास्टर के पद पर पहुंच गये।

फकीर बाबा कहते हैं आन्तरिक उन्नति के लिए अर्थात् आत्मिक पूर्णता पाने के लिए मेहनत और सच्चाई का जीवन अति आवश्यक है। माता पिता के प्रति, पति पत्नी के प्रति, समाज के प्रति, देश और विश्व के प्रति अपना कर्त्तव्य सच्चाई, ईमानदारी तथा दिल से निभाना चाहिए। कोई भी काम केवल इसलिए मत करो कि वह तुम्हें करना ही है। बल्कि उसमें रुचि ले कर करो। जो सन्त अथवा गुरु अपनी आत्मिक सिद्धियों को धन, मान और नाम के कमाने के लिए प्रयोग करने लगता है, वह कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। फकीर बाबा ने अपनी इस ९४ वर्ष की आयु तक लाखों दुखी जीवों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ पहुँचाया है और निरन्तर पहुंचा रहे हैं परन्तु उन्होंने अपनी गुरुआई को कभी धन कमाने का साधन नहीं बनाया। अपने निजी खर्चे के लिए सदा अपने ही परिश्रम की कमाई खाई है।

भारतीय रेलवे विभाग से रिटायर होने के पश्चात् भी उन्होंने काफी समय तक मिलिट्री में एक कलर्क का काम किया और वहाँ से भी रिटायर होने के पश्चात् होशियारपुर में एक सेठ की आटे की चक्की पर मुन्शी का काम करते रहे। यदि वह चाहते तो उनके अनेकों लखपति अनुयायी उनकी माली हालत को एक दिन में ही धन दे कर सुधार देते परन्तु फकीर बाबा कभी भी दूसरों के धन पर निर्भर नहीं रहे। उन्होंने कभी भी भेंट के धन की एक भी पाई अपने तथा अपने परिवार के खर्चे के लिए नहीं लगाई।

आश्रम में जितनी भी भेंट आती है, वह फकीर लायब्रेरी ट्रस्ट को दी जाती है और यह ट्रस्ट तीन धर्मार्थ हस्पताल, तथा एक शिशु पाठ-शाला चला रहा है और एक मानसिक पत्रिका 'मानवता मन्दिर' भी इसी ट्रस्ट द्वारा छपती है जो सत्संगियों को मुफ्त बाँटी जाती है। फकीर बाबा जैसा सच्चा सन्त और सच्चा फकीर पाना इस बीसवीं सदी में बड़ा कठिन है। बड़े बड़े आश्रमों के चलाने वाले गुरु, महात्मा अथवा सन्त जो कि अधिकतर मठ कायम कर लेते हैं, अपने मरने से पहले यह वसीयत कर जाते हैं कि उन के वे मठ धन और सम्पत्ति उनके मरने के पश्चात् उनकी सन्तान को ही दिये जायं। परन्तु फकीर बाबा जैसे असली फकीर ने अपनी वसीयत में लिखा है, 'मेरा मान-वता मन्दिर पर कोई अधिकार नहीं है और न ही मेरा उससे कुछ लगाव है। मैंने वसीयत की है कि मेरे परिवार का कोई भी व्यक्ति मानवता मन्दिर के ट्रस्ट का सदस्य भी नहीं बन सकता, उत्तराधिकारी बनने का तो सवाल ही नहीं उठता।'

इस ९५ वर्ष की वृद्ध आयु में भी निरन्तर परिश्रमी साधक फकीर बाबा में जो चरित्र की महानता तथा ऊंचे विचार दिखाई देते हैं, वह उस समय भी उनमें मौजूद थे, जब वह बिलकुल नवयुवक थे। जब वह रेलवे की नौकरी करते थे, घर की माली हालत अच्छी न होने पर भी और अनेकों रिश्वत लेने के प्रलोभनों पर भी कभी एक पैसे की भी रिश्वत नहीं ली। न ही कभी रेलवे की सम्पत्ति का अपने तथा अपने परिवार के लिए प्रयोग किया और कभी भी अपने अधिकार का अनुचित लाभ नहीं उठाया।

यहाँ पर उनके जीवन की एक घटना का उल्लेख करना अति आवश्यक है। यह घटना उस समय की है, जब वह पहले विश्व युद्ध में ईमान में वर्त्तानवी फौज में तार के विभाग में काम करते थे। उस समय काम करते समय जब वह कोई गलती करते थे तो उसे सर-कारी रजिस्टर में लिख देते थे। जब एक अंग्रेज उच्च अधिकारी

उनके काम का निरीक्षण करने के लिए आया तो रजिस्टर में लिखित उनकी भूलों के बारे में पढ़ कर दंग रह गया। प्राय: मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता यह होती है कि वह कभी अपनी भूलों को स्वीकार नहीं करता। यहाँ पर बात बिल्कुल विपरीत थी। वह अंग्रेज उच्च अधिकारी दंग रह गया और फकीर बाबा की ईमानदारी से प्रभावित हो कर बोला, 'फकीर चन्द ! तुम अपनी भूलों को स्वयं ही रजिस्टर में क्यों लिखते हो ? फकीर बाबा ने उत्तर दिया, मैंने सचमुच में ही ये भूलें कीं और मैं यह जानना चाहता हूं कि मनुष्य भूल क्यों करता है बहुत प्रयत्न करने के पश्चात भी और सच्चाई से काम करने के पश्चात् भी मुझ से भूलें हो ही जाती हैं। क्या आप मुझे यह बता सकते हैं कि मनुष्य भूलें क्यों करता है ?' वह उच्च अधिकारी फकीर बाबा के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे सका।

उस निरीक्षण के एक दो दिन पश्चात् ही फकीर बाबा को सरकारी तार मिला कि उन्हें पहले पद से ऊंचा पद पर तरक्की दी गई है। दूसरे या तीसरे दिन उस अंग्रेज उच्च अधिकारी ने फकीर बाबा से टैलीफोन पर बात करते हुए कहा, 'मिस्टर फकीर चन्द क्या यह जानते हो कि तुम्हें यह तरक्की क्यों दी गई है ?' फकीर बाबा चुप पहले उन्हें कोई उचित उत्तर नहीं सूझा। अंग्रेज अधिकारी ने बात को जारी करते हुए हंस कर कहा, 'तुम्हें तुम्हारी भूलें करने के लिए ही तरक्की दी गई है। फकीर बाबा के सच्चे प्रश्न की कि 'मनुष्य भूलें क्यों करता है' का अत्यन्त सफल उत्तर मिला।

पण्डित फकीर चन्द का विवाह तेरह वर्ष की छोटी आयु में ही हो गया था परन्तु पत्नी का देहान्त कुछ वर्षों के पश्चात् एक बीमारी से हो गया, फिर उनका दूसरा विवाह हुआ। अपने जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए, वे युवावस्था की भूलों को भी सब को बताते हैं हालांकि वे भूलें बहुत नहीं हैं। इन भूलों को करने के पश्चात् ही उन्होंने बहुत ही पवित्र और उत्तम जीवन व्यतीत किया।

अपनी पत्नी तथा सन्तान के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए भी वे साधना और लोक कल्याण में लगे रहे। युवावस्था की भूलों के सम्बन्ध में फकीर बाबा के शब्द इस प्रकार हैं :—

'इस कोमल आयु में मेरा सम्पर्क रेलवे के अफसरों, प्लेटियरों और विभाग के ठेकेदारों से रहा। वे सभी मांसाहारी थे और संगति का मुझ पर भी प्रभाव पड़ा और मैं भी कभी-कभी मांस खाने लगा। मैंने केवल मांस ही नहीं खाया, अपितु उनकी संगति के प्रभाव में आ कर तीन बार रम शराब पिया, एक बार जुआ खेला तथा एक बार वेश्या के पास भी गया।

१९०४ का एक बहुत ठण्डा जाड़े का दिन था। पिछली रात को कांगड़ा जिला में भारी भूकम्प आया था और असंख्य व्यक्ति मारे गये थे। मेरा चचेरा भाई, जो मेरे पास आया हुआ था प्रातः उठा उसने इस कड़ाके की सर्दी में भी ठण्डे पानी से स्नान किया और पूजा पाठ का नित्य का कर्म किया। इस के पश्चात् उसने खाना पकाया और फिर हम दोनों खाना खाने के लिए बैठ गये। उसी समय रेलवे स्टेशन से एक कर्मचारी आया, उसने पके हुए मांस की एक तश्तरी मेरे सामने रख दी। मेरा चचेरा भाई बड़ा धार्मिक विचारों का था, उसने कभी मांस को छुआ तक भी नहीं था, उसे उस पके हुए मांस की गन्ध बहुत बुरी लगी। उसने घृणा से अपना नाक और मुंह बन्द कर लिया और दूर से ही मेरी थाली में दो रोटियां फेंकीं। इससे मेरे मन में एक अजीब उथल-पुथल हुई। मैं इस घटना की उपेक्षा नहीं कर सका। मेरे मन में एक बार विचार धारा चलने लगी और मैं अपने आप से ही वाद-विवाद करने लगा। मैंने सोचा, 'देखो ! एक ओर तो मेरा यह चचेरा भाई है, जो एक शुद्ध और धार्मिक जीवन बिता रहा है और दूसरी ओर मैं हूं जिसके कर्म अपवित्र हैं। ऐसा क्यों है ? लगातार आधे घण्टे तक मेरे मन में यह संघर्ष चलता रहा कि सामने रखे हुए मांस को मैं खाऊं। एक ब्राह्मण के लिए मांस खाने से बड़ा पाप और

क्या हो सकता है। अन्त में मैंने माँस न खाने का फैसला किया तश्तरी को बाहर फेंक दिया और फिर छः महीने तक माँस नहीं खाया। इन छः महीनों के दौरान में मैं पश्चात्ताप की अग्नि में जलता रहा परन्तु बुरी संगत के प्रभाव से मैं अपने आप को फिर भी अलग नहीं रख सका और एक रात को अपनी काम वृत्ति की तृप्ति के लिए वेश्या के पास गया। उसके पश्चात मुझे अपनी गिरावट पर रोना आया और दूसरे ही दिन मैंने पिता जी को एक पत्र लिखा कि मेरे से यह गलती हुई है इसलिए मेरी पत्नी को मेरे पास रहने के लिए भेज दें।

पिताजी ने मेरे अनुरोध पर ऐसा ही किया। एक दिन मैं बाहर घूमने के लिए जा रहा था। मेरे साथ एक गाँव का चौधरी था। रास्ते में माँस खाने के लाभ तथा हानियों पर वाद-विवाद चलने लगा। चौधरी ने माँस खाने के पक्ष में इतनी अच्छी दलीलें दी कि मैं छः महीने पूर्व अपने माँस न खाने के निर्णय को भूल गया और सोचने लगा माँस खाना कोई पाप नहीं है। चौधरी ने अलग होते समय मुझे एक मुर्गा दिया। मैंने उसे एक चौथे दर्जे के कर्मचारी को दे दिया। और उसे कहा कि वह इसे काट कर साफ करके लाये। उसने ऐसा ही किया। मैं मुर्गे का कच्चा माँस घर ले कर गया और अपनी पत्नी को उसे पकाने के लिए कहा। मेरी पत्नी जो पूरी तरह से शाकाहारी थीं, को यह काम करना अच्छा नहीं लगा, परन्तु पत्नी होने के नाते उन्होंने मेरी आज्ञा का पालन करना चाहा। मेरी माता जी को जब यह पता चला कि मुर्गा रसोई में पकाया जायेगा, तो उन्होंने रसोई के अन्दर घुस कर अन्दर सेकुण्डी लगा दी ताकि मेरी पत्नी मुर्गा पकाने के लिए रसोई घर में न घुस सकें। मेरी पत्नी ने बार बार माता जी से प्रार्थना की कि वह दरवाजा खोल दें, परन्तु मेरी माता जी ने दरवाजा नहीं खोला। तब मैंने तथा मेरे भाई ने दरवाजे को जोर जोर से खटखटाया और उनसे दरवाजा खोलने की प्रार्थना की, किन्तु माता जी ने हमारी एक भी नहीं

सुनी। तब अचानक मैंने रसोई घर से धुआं निकलते हुए देखा। मैं कुल्हाड़े से दरवाजे को तोड़ कर अन्दर घुसा। क्या देखता हूं कि माता जी का धुएं के मारे दम घुट रहा था। मैं उन्हें खींच कर बाहर ले आया और प्यार से भरपूर बार बार उन का आलिंगन करते हुए कहा, 'माँ, तुमने दरवाजा क्यों नहीं खोला, यदि धुए की घुटन से तुम्हारी मृत्यु हो जाती, तो मैं अपनी परम प्यारी माँ को कहाँ से लाता। माता जी ने क्रोध में आ कर ऐसे जोर से धक्का दिया कि मैं नीचे गिर गया परन्तु माँ के प्रति मेरा प्रेम कम नहीं हुआ। मैंने उठ कर प्रेम से फिर उनका आलिंगन करते हुए पूछा कि वह मुझसे नाराज़ क्यों हैं। इस पर उन्होंने कहा, 'फकीर ! तुमने एक माता के बच्चे की हत्या की है, उसकी माता मुर्गी अपने बच्चे की हत्या पर विलाप कर रही होगी। तुमने एक महापाप किया है।'

इस घटना से मैं अपने आप को बार-बार धिक्कारने लगा और फिर दृढ़ निश्चय किया कि अब मैं कभी माँस नहीं खाऊंगा। उस समय से ले कर आज ९५ वर्ष की आयु तक मैंने कभी माँस को नहीं छुआ और ऐसा कोई कर्म नहीं किया जो धर्म तथा मानवता के विरुद्ध हो इसमें कोई सन्देह नहीं कि युवावस्था में मैं कामवृत्ति को दबा न... परन्तु इस कामवृत्ति की तृप्ति के लिए मेरी पत्नी मौजूद थी।

नौकरी तथा गृहस्थी के भार को ठीक तरह से निभाते हुए फकीर बाबा की यह प्रबल इच्छा बनी रही कि वह ईश्वर के साक्षात् दर्शन करें और उन से अपने पापों की क्षमा माँगें। फकीर बाबा के शब्दों में 'मैंने अपने पहले किये गये चार पापों के प्रायश्चित्त के लिए भगवन् राम कृष्ण से निरन्तर प्रार्थना करता था रोता था और रोने के पश्चात् फिर भी प्रार्थना करने लगता था। मैं ऐसा इसलिए करता था, क्योंकि मैं चाहता था कि इन पश्चात्ताप के आँसुओं से मेरा मन शुद्ध हो जाये।

यद्यपि मैं लगातार रो-रो कर प्रार्थना करता रहा, फिर भी मेरे वे चार पाप मुझे दुःख देते रहे और मैं अनेक बार बिलकुल अशान्त हो जाता था एक चाँदनी रात की घटना है। आधी रात का समय था। मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था और बुरी तरह से रो रहा था। इतने में क्या देखता हूं कि एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा साधु अपने हाथ में तम्बूरा लिए, मेरे सामने खड़ा है। उसने बड़े प्यार से मुझे कहा, 'प्यारे बालक ! तुम रो क्यों रहे हो' ? मैंने उत्तर दिया, 'मैंने चार महापाप किये हैं। मैं ने हिन्दु ग्रन्थों में पढ़ा है कि ईश्वर इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में अवतार लेते हैं। मैं भगवान राम के दर्शन करना चाहता हूं और उनसे अपने चारों पापों के लिए क्षमा माँगना चाहता हूं।' उस सफेद दाढ़ी वाले साधु ने उत्तर दिया, हे बालक ! तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे लिए इस पृथ्वी पर मनुष्य का रूप धारण किया हुआ है, तुम जल्दी ही उनके सम्पर्क में आओगे और तुम्हें क्षमा मिल जायेगी।' ये शब्द कहने के पश्चात् वह साधु अदृश्य हो गये। इस घटना के पश्चात् भगवान् के साक्षात् दर्शन करने की मेरी बेचैनी और भी बढ़ गई।

इसी दौरान में मुझे भारतीय रेलवे विभाग में बागां वाले रेलवे स्टेशन मास्टर की पक्की नौकरी मिल गई। परन्तु ईश्वर के साक्षात् दर्शन करने की मेरी लालसा कम नहीं हुई बल्कि दिन प्रति दिन बढ़ती चली गई। एक दिन तो मैं भगवान् के दर्शनों के लिए चौबीस घण्टे तक रोता रहा। सब लोग घबरा गये, डाक्टरों को बुलाया गया और दवाइयां आदि दीं। प्रातः ५ बजे के लगभग मुझे महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के स्वप्न में दर्शन हुए। उन्होंने एक पास वाले कुएं से पानी निकाल कर मुझे नहलाया और उसके बाद अपना लाहौर का पता बतलाया। इसी समय मेरे पिता भी वहाँ आ गये और मेरे विरुद्ध महर्षि जी से शिकायतें करने लगे। मैं अभी इस स्वप्न का आनन्द ले रहा था कि इतने में चौकीदार ने मुझे आ कर जगा दिया और मेरा

स्वप्न टूट गया। उस अनुभव से मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ईश्वर ने महर्षि शिवव्रत लाल जी के रूप में अवतार लिया है।'

इस घटना से प्रेरित हो कर फकीर बाबा महर्षि शिवव्रत लाल जी को लाहौर के पते पर दस महीने तक सप्ताह में एक पत्र लिखते रहे किन्तु उनके एक भी पत्र का उत्तर नहीं आया। अन्त में वह जिस प्रकार महर्षि जी के सम्पर्क में आये उसका उल्लेख फकीर बाबा के शब्दों में इस प्रकार है :—

'मैंने हर सप्ताह दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी को स्वप्न में बताये गये उनके पते पर दस महीने तक कई पत्र लिखे, किन्तु उनका कोई भी उत्तर नहीं आया। मैं सदा उनको ईश्वर सम्बोधन कर के लिखता था। पूरे दस महीने के पश्चात् दाता दयाल जी का एक पत्र मुझे मिला, जिसमें उन्होंने लिखा था, 'फकीर मुझे तुम्हारे सभी पत्र लगातार मिलते रहे हैं। मैं तुम्हारी लगन तथा ईश्वर सम्बन्धी भावनाओं का सम्मान करता हूँ। मुझे स्वयं राधास्वामी मत के प्रमुख, राय साहब सालगराम जी की कृपा परम सत्ता का सत्य रूप और शान्ति मिली है। यदि तुम्हें इस मार्ग पर चलने में कोई आपत्ति न हो तो तुम मेरे पास लाहौर आ जाओ' इस समय तक मेरी ईश्वर को मनुष्य के रूप में मिलने की इच्छा चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी।'

महर्षि जी के पत्र को पा कर फकीर बाबा के आनन्द का पारावार नहीं रहा और जल्दी से जल्दी लाहौर जाने की सोचने लगे। उन्होंने कुछ सप्ताह पहले छुट्टी के लिए एक दरखास्त दी हुई थी। जिस दिन महर्षि जी का पत्र आया उसी दिन ही फकीर बाबा की छुट्टी मंजूर होने की खबर आ गई और सरकार द्वारा भेजा गया एक दूसरा सहायक स्टेशन मास्टर उसके स्थान पर काम करने के लिए भी आ गया। फकीर दयाल जी ने इस पूरे प्रबन्ध को महर्षि शिवव्रत लाल जी की कृपा समझा और उनके दर्शनों के लिए उसी दिन लाहौर के लिए रवाना हो गये।

॥ मनुष्य बनो ॥

महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज पूर्ण गुरु और सन्त थे। उनमें बिलक्षण प्रतिभा थी। वह उच्च कोटि के लेखक, मानववादी और नम्र महात्मा थे। उन्होंने अपनी प्रतिभा, दर्शन और आध्यात्मिकता की वर्तमान भारत पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनके द्वारा लिखा हुआ दार्शनिक और धार्मिक साहित्य बहुत बिपुल है। उन्होंने अपने जीवन में लगभग पाँच हजार लेख, पुस्तकें, कविताएँ लिखीं वे न ही केवल उनकी विद्वत्ता की साक्षी हैं, बल्कि वैज्ञानिक साहित्य का एक ऐमा भण्डार हैं, जिसके पढ़ने से मनुष्य को सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सकता है और मानव मात्र को धर्म की कट्टरता और अन्धविश्वास से बचा सकता है। फकीर बाबा ने महर्षि जी को मिलने से पूर्व न तो उनके विषय में कुछ सुना था और न ही उनका साहित्य पढ़ा था। इसलिए उनकी महर्षि जी से जो पहली भेंट हुई वह बहुत ही महत्वपूर्ण थी। फकीर बाबा कहते हैं कि दाता दयाल महाराज ने बहुत ही प्रेम से उनका स्वागत किया और उनका चेहरा तथा आकर शतप्रतिशत वैसा ही था, जो फकीर बाबा ने स्वप्न में देखा था। इससे फकीर बाबा के मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि दाता दयाल जी सचमुच ही भगवान् का अवतार हैं। उसी दिन युवा फकीर चन्द को दाता दयाल जी ने राधास्वामी मत की दीक्षा दी और उनका नाम फकीर चन्द से फकीर दयाल हो गया।

फकीर दयाल जी को दयाल ने राधास्वामी मत के आदि गुरु स्वामी जी महाराज द्वारा लिखित 'सार बचन' नामक पुस्तक पढ़ने को दी, उस पुस्तक को पढ़ते पढ़ते युबा फकीर की आँखों में आँसू टपकने लगे। उसका कारण यह था कि उस पुस्तक में वेदान्त, इस्लाम सूफी मत, बुद्ध धर्म इत्यादि सभी धर्मों की निन्दा की गई थी और यह बताया गया था कि ये सभी धर्म माया के चक्कर से बाहर नहीं निकले। उनके बहते हुए आंसुओं को देख कर दाता दयाल ने उन्हें कहा, इस पुस्तक को दूर रख दो और जब तक मैं तुम्हें इसे पढ़ने का आदेश नहीं दूं मत पढ़ो।'

इसके बाद उन्होंने युवा फकीर को दो और पुस्तकें पढ़ने के लिए दीं, जिनमें से एक महर्षि जी द्वारा लिखित रायसाहब सालिगराम जी महाराज की जीवनी थी और दूसरी सन्त कबीर की कविताओं का संकलन 'कबीर साखी' थी।

उसी दिन से फकीर दयाल जी ने सुमिरन, ध्यान और भजन का अभ्यास दाता दयाल जी की आज्ञा से आरम्भ कर दिया। वह प्रति दिन दाता दयाल जी के रूप पर ध्यान लगाते, इससे उनको बहुत ही आनन्द और सन्तोष मिलता था।

फकीर दयाल जी को दाता दयाल जी ने यह आदेश दिया था कि जहाँ कहीं भी सम्भव हो सके वह राधास्वामी के सत्संग पर अवश्य जाया करें। अतः अपनी रेलवे की नौकरी तथा गृहस्थी का कर्त्तव्य निभाते हुए युवा फकीर सुमिरन और ध्यान में अपना अधिक समय लगाते और जहाँ कहीं भी अवसर मिलता राधास्वामी मत के सत्संग में जाते, परन्तु कुछ समय के पश्चात् उन्हें राधास्वामी मत के कुछ सत्संगियों के व्यवहार से मानसिक धक्का लगा। ये सत्संगी, बाबू कान्ता प्रसाद (जो उत्तर प्रदेश में गाजीपुर के राधास्वामी मत के मुखिया थे) के अनुयायी थे; जो केवल कान्ताप्रसाद जी को ही परम सत्ता राधास्वामी दयाल का अवतार मानते थे और बाकी सबकी निन्दा करते थे। जब फकीर दयाल ने राधास्वामी मत के अनुयायियों का यह पक्षपाती तथा तंग दिली का व्यवहार देखा तो उन्होंने उनसे सम्पर्क रखना पसन्द नहीं किया किन्तु महर्षि दाता दयाल में उनका विश्वास रत्ती भर भी कम नहीं हुआ। १९१६ में अपनी माली हालत को सुधार कर परिवार को गरीबी से बचाने के लिए युवा फकीर ने अपनी सेवाएं पहले विश्व युद्ध के लिए बर्तानिया सरकार को पेश कीं। जब उन्हें इस सैनिक सेवा के लिए बगदाद जाने का आदेश मिला तो वहाँ जाने से पहले दाता दयाल ने बड़े प्यार से उनका स्वागत किया और पूर्ण आशीर्वाद देते हुए और 'सार बचन' नामक वही पुस्तक जिसको

पढ़ने के लिए उन्होंने कुछ समय पहले मना किया था देते हुए कहा, 'अब तुम इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ो और सुमिरन, ध्यान और भजन पर अधिक समय दिया करो।'

बगदाद में फकीर बाबा को साधना का बहुत समय मिलता था, इसलिए वह महर्षि जी के आदेश के अनुसार आन्तरिक अभ्यास में बहुत समय लगाने लगे और उन्होंने प्रकाश और शब्द के सभी आन्तरिक स्तरों का अनुभव कर लिया इस ध्यान के कारण वे सदा आनन्द और मस्ती की हालत में रहने लगे। इतना कुछ होते हुए भी उनके मन में पूरा सन्तोष नहीं था। उनके मन में अभी भी प्रकाश से परे, उस परम सत्य पर पहुंचने की लालसा बनी रही, जिसके आधार पर स्वामी जी महाराज ने अपनी पुस्तक सार बचन, में सभी धर्मों को अपूर्ण बतलाया था।

उस समय परम तत्व को अनुभव करने की प्रबल इच्छा ने उन्हें बेचैन कर दिया। १९१८ के अन्तिम भाग में वह लम्बी छुट्टी ले कर भारत में आये ओर सीधे दाता दयाल जी के पास लाहौर में गये। अपने मन की व्यथा दाता दयाल जी को बताते हुए पूछा, 'मुझे परम सत्य का अनुभव कब और कैसे होगा।' दाता दयाल जी ने उत्तर दिया तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर कल दिया जायेगा।' दूसरा दिन फकीर बाबा के जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण दिन था, इसलिए उस घटना को फकीर बाबा के ही शब्दों में प्रस्तुत करना ठीक होगा। फकीर बाबा कहते हैं :—

'२५ दिसम्बर १९१८ की बात है। हजूर दाता दयाल जी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। मैं पहले से ही इस क्षण को प्रतीक्षा में था। मैं अन्दर गया। हजूर दाता दयाल जी महाराज के चेहरे से एक विशेष प्रकार के प्रेम और आनन्द का भाव टपक रहा था। उन्होंने अकस्मात मेरे हाथों में एक नारियल और पाँच पैसे रख दिये। मेरे मस्तक पर टीका लगाया और मेरे पाँव को नमस्कार करके कहने लगे, 'फकीर तुम स्वयं अपने समय के पूर्ण गुरु हो सत्संगियों को सत्संग और नाम

देना आरम्भ कर दो। समय आने पर तुम्हारे अपने सत्संगी ही तुम्हारा सच्चा गुरु प्रमाणित होंगे और उनके सम्पर्क में जो तुम्हारे अनुभव होंगे, उससे सन्त मत का गुप्त भेद समझ में आ जायेगा।' इन शब्दों ने मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। मैंने उस समय प्रसन्नता और शोक का मिला-जुला अनुभव किया दाता दयाल जी मेरे चेहरे के इन मिले-जुले भावों को भाँप गये और मुझ से इसका कारण पूछा। मैंने नम्रता से कहा, दाता ! जब मैं स्वयं भी सत्य का पूरा ज्ञान नहीं रखता, तो इस ऊंचे मार्ग पर दूसरों को कैसे लगा सकता हूँ ? मैं प्रसन्न इसलिए हूँ कि आपने मुझे एक ऊंची पदवी दे दी है, मैं सतसंग करा सकता हूँ और दीक्षा दे सकता हूँ, ऐसे लगता है कि मैं कुछ बन गया हूँ। यही कारण है कि मेरे चेहरे पर एकदम रौनक आ गई है। परन्तु साथ ही साथ मैं उदास भी हूँ। उसका कारण यह है कि जब मैं यह सोचता हूँ कि दूसरों को इस मार्ग पर कैसे चलाऊंगा जब कि मैं स्वयं अन्धकार में हूँ।' दाता दयाल जी ने मुस्कराते हुए कहा, फकीर भले ही तुम्हारे में निनानवे त्रुटियाँ क्यों न हो परन्तु तुम्हारे में सत्य बोलने का जो गुण है वह तुम्हें यकीनन जीवन के ऊंचे लक्ष्य पर पहुँचा देगा। तुम इसी जीवन में ही न ही केवल स्वयं मुक्ति पाओगे, परन्तु असख्य अन्य जीवों को भी मुक्ति प्राप्त करने में सहायता दोगे मैंने अपनी पूरी छुट्टियाँ दाता दयाल जी के पास बिताई और परम आनन्नद का अनुभव करके वापिस अपने काम पर बगदाद लौट आया।'

बगदाद में आ कर फकीर बाबा समय मिलने पर भक्ति भाव के के भजन गाते रहते और हजूर दाता दयाल जी को भगवान राम का पूर्ण अवतार मानने के कारण उनके प्रेम तथा ध्यान में मग्न रहते। उनकी इस परम भक्ति को देखकर वह बगदाद में रहने वाले सत्संगियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गये और सभी ने उन्हें अपना गुरु भी स्वीकार किया।

इसके पश्चात् ईराक में फकीर बाबा के साथ जो-जो विचित्र घटनाएं घटित हुई, उनमें से कुछ का उल्लेख अगले अध्याय में किया जायेगा। यहाँ पर तो इतना कह देना पर्याप्त होगा कि अनेक बार जब युद्ध के मोर्चे पर फकीर बाबा ऐसी ऐसी भयानक स्थितियों में थे, यहाँ मौत मुंह खोले खड़ी थी, वहाँ चामत्कारिक रूप से दाता दयाल जी द्वारा उनकी रक्षा की गई। इससे फकीर बाबा को दाता दयाल जी में श्रद्धा और विश्वास और भी बढ़ गया।

लगभग तीन महीने के पश्चात जब युद्ध बन्द हुआ और जवान अपने बैरिकों में गये तो फकीर बाबा बगदाद वापिस लौट आये। बगदाद में राधास्वामी मत के बहुत से सत्संगी थे। जब उन्हें उनके वापिस आने का पता चला, तो वे सब मिलकर फकीर बाबा के पास पहुंचे और उन्हें एक ऊंचे सिंहासन पर बिठा कर उनको फूल अर्पित किये और उनकी पूजा की। फकीर बाबा इससे चकित रह गये और उन्होंने सतसंगियों से पूछा, 'आप के तथा मेरे गुरु तो हजूर दाता दयाल जी हैं, जो लाहौर में रहते हैं। मैं तो आपका गुरु नहीं फिर आप मेरी पूजा क्यों कर रहे हैं?' उन सबने मिल कर उत्तर दिया, 'जब युद्ध के मैदान में मौत हमारे सिर पर मंडरा रही थी और हमारे बचने की कोई आशा नहीं थी हमने उनको बताया नहीं।

दाता दयाल जी के जीते जी उन्होंने इस भेद को नही खोला, क्योंकि उनको यह डर था कि ऐसा करने से दाता दयाल जी के सम्बन्ध में उनके शिष्यों के प्रेम तथा श्रद्धा में कुछ कमी आ जायेगी। इसके साथ ही साथ यह भी सम्भव था कि वह भेंट और धन राशि जो लोग दाता दयाल के आश्रम में देते थे उनमें भी कमी आ सकती थी। इन कारणों से फकीर बाबा ने यह उचित समझा कि वह इस भेद को बताने के लिए उस समय की प्रतीक्षा करें, जब ऐसा करने से दाता दयाल जी के धाम को उनके कारण हानि न पहुँचे।

१९३८ में दाता दयाल जी के चोला छोड़ने से पहले फकीर बाबा

ने उन्हीं के आग्रह पर निम्नलिखित तार भेजा :—

'मैं इस बात की प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपनी योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार विश्व में सत्य का प्रचार करूंगा।'

फरवरी १९३८ में दाता दयाल जी परम धाम सिधार गये।

इसके पश्चात फकीर बाबा अपना अधिक से अधिक समय स्मरण ध्यान और भजन में लगाने लगे। 'न्होंने दो पुस्तकें भी लिखीं, जो टीकाएं थीं। एक टीका तो स्वामी जी महाराज द्वारा लिखे हुए 'सार वचन' पुस्तक के उस अध्याय पर थी, जिसका शीर्षक 'हिदायत नामा, है और दूसरी टीका उन्हीं की कृति 'बारामासा' पर थी। इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशित होने के पश्चात बाबा फकीर ने दोनों पुस्तकों की दो दो प्रतियाँ व्यास वाले हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज को भेजीं। फकीर बाबा हजूर सावन सिंह जी महाराज को दाता दयाल का ही रूप मानते थे और उनका बहुत सम्मान करते थे। हजूर सावन सिंह जी ने इन दोनों पुस्तकों को पढ़ कर फकीर बाबा को लिखा, 'फकीर ! मैंने तुम्हारी दोनों पुस्तकों को बड़े ध्यान से पढ़ा है। तुम एक सच्चे फकीर हो। तुम राधास्वामी मत की ऐसी श्रेष्ठ सेवा कर रहे हो, जिसके करने में दूसरे गुरु और हमारे धाम सफल नहीं हुए।

'हिदायत नामा, की टीका में फकीर बाबा ने उस भेद को काफी सीमा तक खोल दिया था, किन्तु फिर भी वह इसका प्रचार खुले आम नहीं कर सके। जिस घटना के पश्चात उन्होंने इस सत्य का खुला प्रचार आरम्भ किया, उसका उल्लेख उन्हीं के शब्दों में करना उचित होगा। फकीर बाबा कहते हैं :—

'फिर भी मैं यह निश्चित न कर सका कि मैं इस सम्बन्ध में क्या करूं। मेरे मन में यह डर था कि यदि मैंने इस सत्य को स्पष्ट शब्दों में कह दिया रूढ़िवादी और तंगदिल और खासकर बिना पढ़े लिखे सतसंगी मेरा विरोध करेंगे। इसलिए मैं १९४२ में चिट्ठी ले कर सीधा हजूर बाबा सावन सिंह जी के पास अपना सन्देह और कठिनाइयाँ

बतलाने के लिए व्यास गया। हजूर बाबा सावन सिंह में मेरा अगाध विश्वास था। और मैं उनका दाता दयाल के समान सम्मान करता था। मैंने हाथ जोड़ कर उन्हें नम्रता से कहा'-हजूर ! मुझे आप मेरे उस कर्त्तव्य अवगत करें, जो मुझे मेरे गुरु जी महाराज ने मुझको दिया है। हजूर मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरे अन्तः करण के बोझ को हटायें ताकि मैं अपने गुरु की आज्ञा को न पालन करने के पाप से बच जाऊं।' हजूर महाराज ने बड़े प्यार से मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—'फकीर ! मैं स्वयं इस सत्य को कई कारणों से स्पष्ट रूप से लोगों के सामने नहीं कह सका हूँ। पहला कारण तो यह है कि आम सतसंगी इस सत्य को जानने के योग्य नहीं हैं। दूसरा कारण यह है कि मैं अपनी संस्था की परिस्थितियों के कारण विवश हूँ। तुम एक सच्चे फकीर हो। तुम अपने गुरु की आज्ञा का पालन निर्भय हो कर करो। मैं हर परिस्थिति में तुम्हारा साथ दूंगा।'

उसी समय से ही मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर लिखने और सत्संग का कार्य करता चला आ रहा हूँ।'

फकीर बाबा ने अपने इस कर्त्तव्य को निभाते हुए लाखों व्यक्तियों को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभ पहुंचाया है और निरन्तर पहुंचा रहे हैं। उनके सत्संग अधिकतर हिन्दी भाषा में ही प्रकाशित होते हैं और अंग्रेजी भाषा में भी इनकी कुछ पुस्तकें छपी हैं। उनके पूरे साहित्य में मानवता को अन्धविश्वास से बचाने तथा सच्ची मानवता को अपनाने पर जोर दिया गया है। उनके जीवन का परम उद्देश्य यह है कि मानव जाति ईश्वर के सच्चे रूप का ज्ञान करके टुकड़े टुकड़े होने से बच जाय। इसी उद्देश्य को ले कर वह इस वृद्ध अवस्था में भी भारत और विदेशों में लम्बी लम्बी यात्राएं करते हैं।

८५ वर्ष की आयु में भी वह लम्बी लम्बी यात्राओं की कठिनाइयों को इसलिए सहन करते हैं कि वह दाता दयाल जी को दिये हुए उस वचन को निभायें जिसका कि उन्होंने प्रण किया था ईश्वर के सच्चे

ज्ञान को विश्व के कोने-कोने मे फैलाना और विश्व भर के दुःखी लोगों के दुःख दूर करने का प्रयत्न करना ।

अगले अध्याय में फकीर बाबा के अपने अनेक सत्संगियों के तथाकथित चमत्कारों की व्याख्या करने से पहले इस विषय में प्रकाश डालना आवश्यक है कि फकीर बाबा का सन्देश भारत की सीमाओं से बाहर कैसे पहुंचा । इस विषय में मुझ संक्षिप्त रूप से यह बताना होगा कि मेरा सम्पर्क फकीर बाबा से क्यों और कैसे हुआ ।

मेरे संस्कार बचपन से ही धार्मिक थे । एक ब्राह्मण वंश में पैदा होने के कारण; मुझे ईश्वर पूजा, ध्यान समाधि, तथा धर्मग्रन्थों को संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ । मेरे पिता जी मेरी जन्म भूमि मुलतान शहर (जो अब पाकिस्तान में है) में अंग्रेजी के एक विख्यात अध्यापक थे । उनका हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी चारों भाषाओं पर अधिकार था । वह गीता और बाईबल पढ़ने के बहुत शौकीन थे । वह खक और उच्च कोटि के उर्दू और अंग्रेजी के कवि थे । उनकी अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित Lovelyeems की पुस्तक उस समय काफी चली थी । की कविताओं की प्रशंसा के पत्र उस समय भारत के वायसराय और जार्ज पंचम ने उन्हें लिखे थे । क्योंकि वह स्वयं मिशन स्कुल में पढ़े थे और बाईबल पढ़ने की उनकी विशेश रुचि थी इसलिए बाईबल का न्यू टैस्टामैंण्ट उन्हें जवानी याद था और साथ ही साथ बचपन से गीता प्रतिदिन पढ़ने के कारण गीता के कई अध्याय उन्हें कण्ठस्थ थे । वे बड़े ही विद्वान तथा कुशाग्र बुद्धि के थे । मैं उनका इकलौता बेटा था । हालाँकि बहनों की कमी नहीं थी । मेरी पाँच बहन थी परन्तु भाई एक भी नहीं था । इसलिए पिता जी का मेरे से प्यार बहुत ही अधिक था । वह जहाँ भी जाते मुझे अपने साथ ले जाते और बचपन से ही मुझे बहुत अच्छे-२ कपड़े पहनाते और जो माँगता वही ले देते । उन्हीं की कृपा से एक बार पाँच वर्ष की आयु में मुझे महामान [illegible]

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हुए । उस समय महामना पण्डित जी किसी धर्म सम्मेलन पर मुलतान शहर में आये हुए थे वह वहाँ के नगर सेठ, जी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे उनके घर ठहरे हुए थे । उनका नाम रायबहादुर हरि-चन्द मेहरा था । मेरे पिता जी रायबहादुर जी की पोती को अंग्रेजी पढ़ाते थे और रायबहादुर मेरे पिताजी का बहुत सम्मान करते थे । महामना पण्डित जी के आने पर उन्होंने मेरे पिता जी कोभी अपने घर बुलाया और पिता जी अपनी आदत के अनुसार मुझे अपने साथ ले गये । जब हम पण्डित जी से मिले उस समय अचानक मेरे पिता जी को रायबहादुर जी ने दूसरे कमरे में बुला लिया मैं पण्डित जी महाराज के पास अकेला रह गया । उन्होंने बड़े प्यार से मुझसे पूछा 'बच्चे ! क्या तुम्हें गायत्री मन्त्र आता है '? मैंने तुरन्त ही उन्हें गायत्री मन्त्र गा कर सुना दिया । पण्डित जी बड़े प्रसन्न हुए और प्यार से मेरे माथे का चुम्बन करके मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया और पाँच रुपये का एक बिलकुल नया चमकता हुआ नोट मेरे हाथ में पकड़ा दिया । मैं समझता हूँ कि महामना द्वारा यह मेरी दीक्षा थी । यह घटना मुझे आज अच्छी तरह से याद है ।

कालेज की शिक्षा के दौरान में और आगे चल कर पी० एच० डी० के अनुसन्धान के दौरान में मुझे भगवान् की कृपा से इस्लाम, सिक्ख, जैन, बौद्ध तथा ईसाई धर्म का गहरा तुलनात्मक अध्ययन करने का अवसर मिला । संस्कृत भाषा में एम० ए० तक की शिक्षा प्राप्त करने के कारण मैंने वेदों, ब्राह्मणों उपनिषदों, और भगवद्गीता आदि का मौलिक अध्ययन भी किया । परम सन्त, परम फकीर श्री फकीर बाबा के साक्षात्कार करने से पहले प्रकृति मुझे मानो उनके दर्शन करने योग्य बना रही थी, इसलिए मैं अनेक विद्वानों, धार्मिक प्रचारकों गुरुओं तथा दार्शनिकों के सम्पर्क में आया ।

सभी मुख्य धर्मों का गहरा अध्ययन करने के कारण और मुख्य ... मेरे मन के अन्दर यह रत्तीभर

भी सन्देह नहीं था कि सभी धर्म एक ही ईश्वर को पाने के भिन्न भिन्न मार्ग व साधन हैं और ईश्वर की एकता एक वैज्ञानिक सत्य है। मेरा यह दृढ़ विश्वास था कि भिन्न-भिन्न धर्मों के आपसी झगड़े या विरोध किसी बड़ी भारी भूल पर ही आधारित हैं। मुझे आज तक किसी धर्म से घृणा करने का विचार तक ही नहीं आया।

सौभाग्य वश मुझे वैदिक दर्शन का गहरा अध्ययन, समकालीन भारत के महान विद्वान, जयपुर निवासी पण्डित मोतीलाल शास्त्री की कृपा से ही हुआ। पांच वर्ष की आयु से ही मैं साधना करता चला आ रहा हूँ इसलिए मेरा व्यक्तित्व केवल बौद्धिक स्तर तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि ईश्वर भक्ति के भाव से भी सिंचित रहा।

बचपन से ही मुझे ईश्वर भक्ति के साक्षात् दर्शन करने की लालसा रही हैं, सम्भवतया इसी कारण ईश्वर की महती कृपा से मेरी शिक्षा दीक्षा इसी प्रेरणा के अनुसार ही चलती रही। जिस समय मैंने गवर्नमैण्ट एमरसन कालेज मुलतान में दाखला लिया, उस समय प्रायः सभी अच्छे घरानों के अच्छे नम्बर लेने वाले छात्र इंजीनीयर अथवा डाक्टर बनने के उद्देश्य से साईन्स के विषय लेते थे। हालांकि मैंने मैट्रिक अच्छे नम्बर ले कर (१४ वर्ष की आयु में) पास की थी फिर भी बहुत लोगों के कहने के पश्चात भी कि मैं साईन्स लूं, मैंने दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी तथा संस्कृत के विषय ही चुने। प्रकृति की बात देखो कि पहले ही वर्ष मेरा सम्पर्क जिन जिन प्रोफेसरों से हुआ वे प्रायः सभी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उनमें से कालेज के बाइस प्रिन्सीपल प्रोफेसर सदानन्द, महात्मा हंसराज जी के लड़के थे जो अपने विख्यात पिता की भांति आर्य समाजी न हो कर स्वामी सियाराम के चेले थे और योगाभ्यास करते थे। उनका मेरे ऊपर विशेष प्रेम था क्योंकि मैं कालेज में प्रथम स्थान लेता था और वाद विवाद सम्मेलनों में सदा बोलता रहता था। दूसरे प्रोफेसर जिन्होंने मुझे प्रभावित किया वे दर्शनशास्त्र पढ़ाते थे और उनका नाम सावनदास था। वह प्रोफ़ेसर होने के साथ-साथ

ईसाई पादरी भी थे। उनकी मुझ पर बहुत कृपा रही वह मुझे अपने घर और कई बार गिरजाघर भी ले जाते थे। उन्होंने ईसाई मत के विषय में मुझे बहुत कुछ बताया। मेरे दर्शनशास्त्र के दूसरे प्रोफेसर ताज मोहम्मद ख्याल, दर्शनशास्त्र के विद्वान होने के साथ साथ एक उच्च कोटि के उर्दू के कवि और इस्लाम धर्म के विद्वान थे। वह भी मुझे बहुत प्यार करते थे और प्रायः घर बुलाते रहते थे। इस्लाम धर्म के विषय में मैंने उनसे बहुत ज्ञान प्राप्त किया। मेरी अंग्रेजी भाषा के प्रोफेसर सरदार गुरुचरण सिंह जी थे, जिनसे मुझे सिक्ख धर्म का ज्ञान प्राप्त हुआ। मेरे संस्कृत विद्वान् थे। उन्होंने संस्कृत भाषा के साथ साथ हमें भगवद्गीता और उपनिषदों की शिक्षा भी दी।

संस्कृत की एम० ए० की शिक्षा पाने लिए मैं पंजाब यूनिवर्सिटी के ओरिएण्टल कालेज लाहौर में गया। यह कालेज यूनिवर्सिटी का एक निराला ही कालेज था जिसमें केवल संस्कृत, फारसी और अरबी पढ़ाई जाती थी। डाक्टर सर मोहम्मद इकबाल, विख्यात उर्दू कवि जिन्होंने अमर कविता, 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा' लिखी थी किसी समय उसी कालेज के प्रिन्सीपल रहे थे जिस समय मैं वहाँ पढ़ता था संस्कृत के महान विद्वान डाक्टर लक्ष्मण स्वरूप जी हमें वैदिक व्याकरण पढ़ाते थे और सस्कृत के विख्यात विद्वान डा० सूर्यकान्त हमें वेद पढ़ाते थे। प्रोफेसर जगन्नाथ अग्रवाल हमें ब्राह्मी लिपि के शिला-लेखों का ज्ञान कराते थे। इसी प्रकार डा० रघुवीर, जिन्होंने भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक शब्दों के कोष लिखे हैं, सप्ताह में हमें एक बार संस्कृत भाषा का तुलनात्मक अध्ययन कराते थे।

मेरी दर्शनशास्त्र की एम० ए० कराने के दौरान में मेरा सम्पर्क शिक्षा शास्त्री प्रोफेसर जी० सी० चैटर्जी से हुआ, जो पाश्चात्य दर्शन के एक विख्यात विद्वान् थे और इंगलैंड की विश्व विख्यात यूनिवर्सिटी कैम्ब्रिज के प्रोफेसर जी० ई० मोर के शिष्य थे। जब मैंने पी० एच० डी०

की उपाधि के लिए रिसर्च की, तो मेरे सुपरवाईजर डा० राधाकृष्णन के परम शिष्य, विश्व विख्यात प्रोफेसर पी० टी राजू रहे। इसी सम्बन्ध में मेरी डा० राधाकृष्णन से कई बार भेट हुई और बाद में वह मुझे अपने बेटे की भाँति समझने लगे। १९६३ में जब मैं अमेरिका में दर्शनशास्त्र पढ़ा रहा था उस समय डा० राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति थे और वह अमेरिकन राष्ट्रपति जाहन कैनेडी के निमन्त्रण पर अमेरिका आये। उन्होंने तीन दिन तक मुझे अपने साथ रखा। इस अवसर पर मैंने उनके निकट रह कर उनका जो प्यार देखा उससे मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि वह न ही केवल विश्व विख्यात उच्च कोटि के लेखक, दार्शनिक और भारत के उच्चतम अधिकारी थे, बल्कि उसके साथ साथ वह महा आकर्षक, सच्चे मानव और ईश्वर भक्त भी थे।

मेरी पी० एच० डी० के रिसर्च के दोरान में मेरा सम्पर्क तेरापन्थी जैन आचार्य मणि, जयपुर के जैन विद्वान पण्डित चैनसुख दास, विख्यात विद्वान मुनि जिन विजय जी महाराज तथा डा० ए० एन० उपाध्याय और हिन्दु संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान मानव आश्रम के पवर्त्तक जयपुर निवासी पण्डित मोतीलाल जी शास्त्री से हुआ, जिन्होंने वेदों उपनिषदों भगवदगीता के वैज्ञानिक पहलू पर एक लाख पच्चीस हजार का साहित्य लिखा। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित हो कर भारत के पहले राष्ट्रपति महामना डा० राजेन्द्र प्रसाद जी उनके शिष्य बन गये और उन्हें १९४४ में हिन्दु संस्कृति की व्याख्या के लिए राष्ट्रपति भवन में पाँच दिन भाषण देने के लिए आमन्त्रित किया। इन भाषणों को सुनने के लिए उस समय के भारत के बड़े बड़े विद्वानों, दार्शनिकों तथा लेखकों को भी आमन्त्रित किया गया। इन सभी भाषणों की सभी विद्वानों ने बहुत ही प्रशंसा की। बाद में ये पाँचों व्याख्यान राष्ट्रपति जी के आग्रह से तथा उन्हीं द्वारा भूमिका लिखे जाने के बाद एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये गये, जो एक अमूल्य निधि है।

पण्डित मोतीलाल जी शास्त्री की मेरे ऊपर बहुत ही कृपा थी।

पांच वर्ष तक लगातार मैं हर गर्मी की छुट्टियों में उनके 'मानव आश्रम' में रह कर प्रतिदिन उनके चरण स्पर्श करके उनसे वेदों का ज्ञान प्राप्त करता था। वह पूर्ण कर्मकाण्डी थे परन्तु बड़े ही दयालु और पूर्ण मानववादी। एक दिन जब उन्हें इस बात का पता चला कि मेरा विवाह एक ब्राह्मण लड़की से हुआ है तो मेरी परीक्षा लेने के लिए मुझे डाँटा और कहा 'ईश्वर चन्द्र ! तुमने एक उच्च कुल के ब्राह्मण हो कर एक अब्राह्मण कन्या से क्यों विवाह किया' मैं चुप रहा तभी दयालु पण्डित जी अपनी सुन्दर मुस्कराहट से बोले, 'मैं मज़ाक कर रहा था, तुम्हारी पत्नी में एक सच्ची ब्राह्मणी के लक्षण हैं; वह बहुत अच्छी हैं। आज से वह मेरी बेटी हुई।' उसी दिन से वह मेरी पत्नी भाग्य को या तो बेटी कह कर बुलाते या शरमानी। पण्डित जी के असीम प्यार को याद करके आज भी मेरी पत्नी के आँसू बहने लगते हैं।

पण्डित जी दिन में १८ घण्टे ही लिखते थे। और केवल दो घण्टे ही सोते थे। दो घण्टे पूजा पाठ, साधना इत्यादि और दो घण्टे अपने परिवार के साथ बिताते थे। उन्होंने ४२ वर्ष अल्प आयु में इस शरीर को छोड़ दिया। उनके शरीर छोड़ने के पश्चात मुझे उनसे और भी अधिक प्रेरणा मिली और मैंने उनके विचारों के अनुसार Ethicalbh ilosoPhies of India लिखी जो १९६४ में इंगलैण्ड के विश्व विख्यात प्रकाशन जार्ज एलन एण्ड अनविन तथा अमेरिका के एक प्रकाशक द्वारा साथ साथ छपी। पाश्चात्य विद्वानों ने इसे इतना पसन्द किया कि यह पुस्तक अमेरिका इगलैण्ड, आस्ट्रेलिया तथा कनेडा के मुख्य कालेजों तथा यूनिवर्सिटियों में पढ़ाई जाने लगी और इसे फिर छापा गया। इस पुस्तक के कारण मुझे कई बार अमेरिका पढ़ाने के लिए बुलाया गया। पण्डित जी के विषय में यहां यह सब लिखने का मेरा अभिप्राय यह है कि मैं इतना चाहता हूं कि महाविद्वान पण्डित जी ने पाँच वर्ष की अवधि में अपने अनस्त ज्ञान के कारण वेदों तथा

उपनिषदों के तत्व की जो बातें मुझे बताई वही सभी बातें फकीर बाबा ने अपनी अति दया से सीधी सादी भाषा में अपने अनुभव के आधार पर बताई। उनमें कुछ भी अन्तर नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि सच्चाई एक है।

यद्यपि सभी धर्मों के परस्पर सहयोग में मेरा बचपन से ही विश्वास रहा हैं, फिर भी उपरोक्त सभी महानुभावों के सम्पर्क में आना मेरे लिए एक परम सौभाग्य था। इनके सम्पर्क से मेरे मन में रहे सहे सन्देह भी दूर हो गये और धर्मों की एकता में मेरा विश्वास और भी अधिक हो गया। परन्तु इतना सब होते भी, एक सफल अध्यापक, लेखक तथा दार्शनिक होते हुए भी मुझे पूरा सन्तोष नहीं था। मैं इस बौद्धिक स्तर से भी ऊपर उठ कर ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहता था। बचपन से ही ईश्वर के दर्शन करने की मेरी लालसा कम नहीं हुई। १९४९ में एक रात को मुझे एक स्वप्न आया, जिसे मैंने प्रातः उठते ही अपनी पत्नी को बताया। इस स्वप्न में मुझे एक बहुत ही दयालु आकर्षक तथा जीवनमुक्त एक ऐसे सफेद दाढ़ी वाले महात्मा के दर्शन हुए, जिनकी मुस्कराहट से रोशनी फैल रही थी उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देते हुए कहा, 'तुम्हें इसी जीवन में ही ईश्वर का साक्षात्कार होगा और मुक्ति मिलेगी'। वह महात्मा मूझे अपने साथ देश, विदेशों में ले गये। मैंने अपने आपको उनके साथ यात्रा करते हुए तथा उनको विदेशियों से परिचित कराते हुए देखा। यह भी देखा कि विदेशी उनके भाषणों से बहुत प्रभावित हुए।

समय बीतने पर मैं इस घटना को एक दम भूल ही गया और इनकी याद मुझे तभी आई, जब फकीर बाबा से मेरी पहली भेंट हुई माह सितम्बर १९६४ की बात है जब मैं अमेरिका में दूसरी बार पढ़ाने के दौरे से वापिस देहली पहुँचा तो अपने बहनोई श्री रमेशचन्द्र के घर ठहरा। उन्हीं दिनों परम सन्त फकीर दयाल जी महाराज बिरला मन्दिर में सत्संग दे रहे थे। रमेशचन्द्र उनके सत्संग में जा रहे थे,

उन्होंने मुझसे कहा 'एक बहुत बड़े महात्मा आज सत्संग दे रहे हैं, यदि आप चाहें तो मेरे साथ चल कर उनके सत्संग का लाभ उठा सकते हैं मैंने न तो कभी फकीर दयाल जी का नाम सुना था और न ही उनको देखा था। अमेरिका से मैं कुछ घण्टे पहले ही लौटा था। इस लम्बी यात्रा से मैं बहुत थका हुआ था और मुझे नींद सी आ रही थी। एक बार मेरी इच्छा हुई कि मैं रमेश जी को मना कर दूँ परन्तु न जाने कौनसी शक्ति मुझे फकीर बाबा के दर्शनों के लिये खींच रही थी, अतः मैं रमेश जी के साथ हो लिया। जब हम हाल में पहुंचे तो फकीर बाबा का सत्संग चल रहा था और लगभग दो हजार आदमी उसका लाभ उठा रहे थे। ज्यों ही मेरी नजर स्टेज पर बैठे हुए दिव्य महात्मा पर पड़ी, मैं आश्चर्य से भौंचक्का रह गया। यह वही अति आकर्षक महात्मा थे जिनको छः वर्ष पूर्व मैंने स्वप्न में देखा था। मैं उनके सुन्दर रूप को देखने में इतना तल्लीन हो गया कि मुझे वहां के वातावरण का भी ज्ञान नहीं रहा और मैं एक बुत की भाँति वहाँ खड़ा का खड़ा रह गया। इतने में रमेश जी ने मुझे हिला कर हाल में सबसे पीछे वाली पंक्ति में बैठने को कहा। जब हम दोनों बैठने वाले ही थे कि इतने में फकीर बाबा ने हमें देखा और उन्होंने रमेश जी को इशारा करके हम दोनों को स्टेज पर आने को कहा। जब मैं स्टेज पर जा उनके कोमल चरणों का स्पर्श किया तो उन्होंने बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया और मुस्करा कर बोले 'तो तुम हो हो शर्मा दी ग्रेट ! तुम मेरे पास ही बैठ जाओ।' मैं अपने नाम के सम्बोधन से चकित रह गया कि वह मेरा नाम कैसे जान गये। सम्भवतया रमेश जी के साथ होने के कारण उन्होंने समझ लिया होगा कि मैं उनका कोई सम्बन्धी हूँ, इसलिए शर्मा कह दिया होगा। परन्तु 'तो तुम हो शर्मा दी ग्रेट' उन्होंने क्यों कहा, जब कि वह मुझे जानते ही नहीं थे। उस समय मुझे इस रहस्य का पता नहीं चला। बाद में मुझे परम हंस रामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द की उस घटना का स्मरण हो

आया जिसमें परमहंस जी का उस समय के नरेन्द्र नामक नवयुवक (जो बाद में संसार में विवेकानन्द के नाम से विख्यात हुए) से पहली भेंट हुई थी। उस समय के नास्तिक नवयुवक नरेन्द्र जब परमहंस की बड़ी प्रशंसा सुनने पर एक मित्र के साथ उन्हें देखने के लिये आये, तो परमहंस, जिन्होंने युवक नरेन्द्र को कभी देखा भी नहीं, सम्बोधित करके बोले थे 'तो तुम आ ही गये नरेन्द्र ! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में ही था।' नवयुवक नरेन्द्र भौचक्के रह गये कि परमहंस उनका नाम कैसे जानते थे और उनकी प्रतीक्षा क्यों कर रहे थे। इस घटना के स्मरण हो जाने से जब मुझे इस भेद का पता चल गया कि सत् पुरुष सर्वज्ञ और अन्तर्यामी होते हैं तो फकीर बाबा को मेरे विषय में जानने का रहस्य तब रहस्य नहीं रहा और मेरी श्रद्धा उनमें दिन प्रति दिन बढ़ती चली गई।

उस दिन से फकीर बाबा के आशर्वाद से मुझे हर साल अमेरिका बुलाया जाने लगा। १९६७ में मुझे एक साथ तीन साल वहाँ पढ़ाने का निमन्त्रण आया। किन्तु इस समय तक मेरी ये यात्राएं पढ़ाने तक ही सीमित रही १९६८ में फकीर बाबा ने अति कृपा क.के मुझे एक पत्र लिखा। उस समय मैं वर्जीनिया के एक कालेज में पढ़ा रहा था। इस पत्र में उन्होंने मुझे लिखा, 'शर्मा ! तुम्हारा अमेरिका में जाने का उद्देश्य कालेजों तथा यूनिवर्सिटियों में पढ़ाने तक ही नहीं होना चाहिए। तुम वहाँ के लोगों को आध्यात्मिक लाभ भी पहुंचाओ। प्रकृति ने तुम्हें उन लोगों के साथ लगाया है, तुम उनमें आध्यात्मिक जागृति पैदा करो। सच्चाई को संसार के सभी लोगों में फैलाने के लिए प्रकृति ने तुम्हें मेरे सम्पर्क में ला दिया है। इस सच्चाई के फैलाव के लिए केवल तुम और मैं ही नहीं बल्कि बहुत से दूसरे लोग भी मालिक की मरजी से घसीटे जा रहे हैं, क्योंकि विश्वशान्ति के लिए संसार के दो शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका तथा रूस के वातावरण को बदलना अत्यन्त आवश्यक है, तो सारी दुनिया बरबाद हो जायेगी। सौभाग्यवश

अमेरिका के निवासी भगवान् में आस्था रखने वाले तथा जिज्ञासु हैं, तुम उनकी भलाई के लिए अपना अधिक से अधिक समय लगाओ। इसके संन्यास लेने की आवश्यकता नहीं है। अपनी पत्नी तथा बच्चों के प्रति कर्त्तव्य को निभाना भी अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु इस कर्त्तव्य को निभाते हुए भी अपने परम उद्देश्य को मत भूलो और अधिक से अधिक समय साधना तथा लोककल्याण के लिए लगाओ। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ रहेगा। अब की बार जब तुम भारत आओगे तो मैं पूरी तरह से जाँच करूंगा।'

फकीर बाबा के इस प्यार भरे और प्रेरणा देने वाले पत्र को मैंने कई बार पढ़ा और हर बार मुझे परम आनन्द प्राप्त हुआ। इस पत्र के मिलने के कुछ ही दिन पश्चात् अमेरिका की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'ऐसोसिएशन फार रिसर्च एण्ड एनलाईटमैन्ट (जिसका संक्षिप्त नाम ए० आर० ई० है) के मुखिया श्री ह्यलिन केसी ने मुझे वर्जीनिया बीच बीच में बुलाया जहाँ उनकी संस्था का बड़ा भारी केन्द्र है। इस संस्था के संचालन श्री ह्यलिन केसी के स्वर्गीय पिता एडगर केसी थे जिनकी १९४५ में मृत्यु हो गई थी। एडगर केसी पाश्चात्य जगत के एक सिद्ध पुरुष माने जाते है उन्होंने अपने जीवन काल मे अनेक तथाकथित चमत्कार दिखाये और अनेकों भविष्यवाणियाँ की। जब एडगर केसी किशोरावस्था में ही थे तो उन्हें जब सुला दिया जाता तो वह समाधि की अवस्था में चले जाते और उन्हें भूत और भविष्य की बातों का ज्ञान हो जाता था। उनकी शिक्षा केवल सातवीं कक्षा तक ही हुई थी। बिना किसी डाक्टरी ज्ञान प्राप्त करने के, उन्होंने ऐसे २ मरीजों की ऐसी २ बीमारियों का उपचार किया, जिनका कि बड़े एम० डी० डाक्टर नहीं कर सके थे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि जब कोई व्यक्ति उनके पास किसी रोगी के विषय में आ कर बताता, तो एगडर केसी की समाधि की अवस्था में रोगी का शरीर और उसके छोटे २ भाग उनकी आखों के सामने आ जाते, यद्यपि रोगी उनसे सैकड़ों मीलों की दूरी पर ही

होता था। एडगर केसी फौरन बीमारी समझ लेते और उनका सफल उपचार करने की घटनाओं से अमेरिका के डाक्टर चकित रह गये और उनको चकित कर देने वाली चमत्कारी घटनाओं के समाचार सन् १९१० में न्यूयार्क जैसे विख्यात राष्ट्रीय पत्रों में छपने लगे। बड़े बड़े मेडिकल जनरलों में भी वैज्ञानिकों तथा विख्यात डाक्टरों ने उन पर लेख लिखे। उनकी ख्याति चारों ओर फैल गई और बड़े बड़े डाक्टर असाध्य रोगों के विषय में एडगर केसी से सलाह लेने के लिए आने लगे।

लोगों की भलाई के लिए दयालु एडगर केसी ने वर्जीनिया बीच नामक अति सुन्दर नगर में समुद्र के किनारे एक संस्था स्थापित की जिसमें उन्होंने एक अस्पताल स्थापित किया। इसी संस्था का नाम बाद में चल कर ए० आर० ई० हो गया; जिसका उद्देश्य ईश्वर सम्बन्धी सत्य, पुनर्जन्म जन्म और कर्म सिद्धान्त पर खोज करना और लोगों को योग साधना सिखाना है। एडगर केसी ने हरि ओ३म् नाम पर ध्यान लाने की सलाह दी।

इस संस्था के इतिहास में सन् १९२३ के आस पास एक ऐसी घटना घटी, जिसके कारण पश्चिमीय जगत् में एक नई चेतना की लहर जोरों से चल पड़ी, यह लहर थी पुनर्जन्म में तथा कर्म सिद्धान्त में विश्वास और समाधि, ध्यान आदि में रुचि, जिसका आज तक भी प्रचार चल रहा है। इस संस्था के सदस्य सारे संसार में फैले हुए हैं। योरुप के देशों, आस्ट्रेलिया, चीन, कैनेडा तथा जापान से प्रति वर्ष इस संस्था में आते हैं। गर्मी की ऋतु में बहुत से सम्मेलन भी होते हैं और विद्वानों के भाषण भी। अमेरिका के मुख्य नगरों तथा विश्व के देशों के कुछ नगरों में भी इस संस्था की शाखाएँ हैं। लाखो लोग एडगर केसी के अनुयायी हैं जो अधिकतर ऊंची शिक्षा वाले डाक्टर, इन्जीनीयर, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक तथा व्यापारी हैं। इसी संस्था के कारण वर्जीनिया के बीच लाखों लोगों के लिए मानो एक तीर्थ स्थान बन गया है

इस संस्था के विख्यात होने का सबसे बड़ा कारण है पश्चिम में पुनर्जन्म तथा कर्म सिद्धान्त का प्रचार। एडगर केसी के कारण अब करोड़ों पश्चिमीय पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखते है। एडगर केसी को एक दिन कैसे समाधि की अवस्था में पुनर्जन्म के रहस्य का पता चला, इस घटना का यहाँ उल्लेख करना ठीक रहेगा।

१९२३ में एडगर केसी को अहाओ प्रान्त के एक नगर डैटन के एक प्रिण्टिंग प्रैस के मालिक श्री आर्थर लैमर्स ने बुलाया। श्री लैमर्स वह चाहते थे कि एडगर केसी समाधि की अवस्था में जा कर उसे यह बतायें कि उसकी लम्बे अरसे से चली आ रही बीमारी का क्या कारण है। एडगर केसी समाधि की अवस्था में जाने पर बोले, 'तुम्हारे लम्बे अरसे से बीमारी का कोई शारीरिक कारण नहीं है यह तो तुम्हारे पूर्व जन्म का फल है। तुम्हारी यही पत्नी, पिछले जन्म में भी तुम्हारी ही पत्नी थी जो तुम से बहुत घृणा करती थी। तुम इस जन्म में अपने अचेतन मन में उसी कारण अपनी पत्नी से घृणा करते हो, इससे तुम-हारा मन सदा अशान्त रहता है और मन की अशान्ति के कारण तुम सदा बीमार रहते हो। अपनी पत्नी से घृणा करना छोड़ दो, उसे प्यार करो, तुम्हारे बुरे कर्मों का अन्त हो जायेगा और बीमारी दूर हो जायेगी।

समाधि की अवस्था में एडगर केसी जो बोलते थे उनकी ग्लैडस डेविस नाम की सेक्रेटरी उसे अक्षरण: लिखा करती थी। जब एडगर केसी उस दिन अपनी समाधि से जगे तो सदा की भाँति अपनी समाधि की अवस्था में कही हुई बातों को पढ़ा। 'पुनर्जन्म' तथा 'कर्म' जैसे शब्दों को पढ़ कर उनके मन को बहुत बड़ा धक्का लगा। वह एक कट्टर ईसाई थे। बाईबिल का पाठ प्रति दिन करते थे और इतवार के दिन स्कूल में बाईबिल पढ़ाते भी थे। उन्होंने ईसाई धर्म के अतिरिक्त और किसी धर्म के बारे में कभी कुछ नहीं पढ़ा था। ये 'पुनर्जन्म तथा 'कर्म' के शब्द उनके हृदय पर हथौड़े की भाँति चोट पहुँचाने लगे।

वह अपने आपको बार-बार कोसने लगे कि उन्होंने बाईबल के विरुद्ध इन शब्दों का अपनी समाधि की अवस्था में क्यों प्रयोग किया। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि वे उनकी इस शक्ति को वापिस ले लें। वह ऐसी कोई भी बात नहीं कहना तथा सुनना चाहते थे जो ईसाई धर्म पर आधारित न हो। उन्हें पूरा दिन चैन नहीं आया और रात को नींद न आई और वह रात भर बेचैन की अवस्था में डेटन की गलियों में घूमते रहे कई दिन तक एडगर केसी की यही अवस्था रही, किन्तु तब उन्हें अचानक ध्यान आया कि पुरानी और नई बाईबल में कहीं भी तो यह नहीं लिखा है कि पुनर्जन्म नहीं होता। कर्म सिद्धान्त के बारे में उन्हें अचानक बाईबल के एक वाक्य की याद आई, 'As you So Shall you Reap' यह कर्म सिद्धान्त नहीं तो और क्या है। इससे उनके मन को बड़ी शान्ति मिली। उन्होंने एक बार फिर बाईबल को निरीक्षण करने की दृष्टि से पढ़ा और कई स्थानों पर ईसा मसीह द्वारा पुनर्जन्म के समर्थन की बातों को बताया। उदाहरणस्वरूप ईसा मसीह के समय, एक साधु जिसका नाम जाहन दी बैप्टिस्ट था, सब लोगों को ईश्वर की ओर लगाने की दीक्षा दे रहा था। दीक्षा देते समय वह कहता था कि भगवान के एकमात्र पुत्र ने जन्म ले लिया है। बहुत से लोगों का यह विचार था कि जान दी बैपटिस्ट पिछले जन्म में ऐलाईजा नाम का पैगाम्बर था। ईसा मसीह के शिष्यों ने एक बार उनसे पूछा, 'लोग कहते हैं कि ऐलाईजा ही जान दी बैपटिस्ट बन कर आया है। आप बताओ कि क्या यह बात सत्य है 'ईसा मसीह ने कहा, 'हाँ ! जान दी बैपटिस्ट एलाईजा ही है जो वापिस आया है' यह पुनर्जन्म नही तो फिर क्या है। ऐसी एक नहीं परन्तु अनेकों घटनाओं को बाईबल में देख कर एडगर केसी को पक्का विश्वास हो गया कि पुनर्जन्म तथा कर्म सिद्धान्त का, बाईबल या ईसाई धर्म से कोई विरोध नही है। आगे चल कर तो उन्होंने यहाँ तक भी कहा कि ईसा मसीह युवावस्था में भारत गये थे, वहाँ योग साधना

इत्यादि सीखा था एडगर केसी ने अपनी समाधि की अवस्था में हजारों लोगों को उनले पिछले जन्मों की बातें बताई। कुछ लोगों को बताते समय उन्होंने उनके जन्म स्थान, जन्म तथा मृत्यु की तिथियाँ तक भी भी बता दीं, जिनकी जाँच करने पर वे सत्य सिद्ध हुई। उन्होंने अपने जीवन काल में हजारों रोगियों की बीमारियाँ पहचानी और उनका सफल उपचार बताया। उनकी समाधि की अवस्था में बोले गये एक-२ वाक्य को सेक्रेटरी ने लिख लिया था। ये हजारों पृष्ठ मुद्रित अथवा प्रकाशित सैकड़ों फाइलों में तथा पुस्तकों के रूप में आज भी इस संस्था में सुरक्षित हैं। जिन पर लगातार खोज हो रही है बड़े बड़े डाक्टर, मानसिक चिकित्सा के डाक्टर, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक; तथा विद्वान् इनसे लाभ उठा रहे हैं। एडगर केसी पर दर्जनों बैस्ट सैलरज छप चुकी हैं, जिनकी लाखों प्रतियाँ प्रत्येक वर्ष बिकती हैं।

इस संस्था में मेरे बुलाये जाने का कारण यह था क्योंकि श्री ह्यूलिन केसी को कहीं से यह पता चला कि मैं वर्जीनिया बीच से २०० मील की दूरी पर लिन्चवर्ग नाम के एक नगर के कालेज में भारतीय दर्शन पढ़ा रहा हूँ। सम्भवतया उन्होंने मेरी पुस्तक 'Ethical bhilosphies of India' भी देखी थी, इसलिए उनकी मेरे में रुचि हो गई। उन्होंने मेरे से टेलीफोन पर बातचीत की और तत्काल वर्जीनिया बीच में आने को कहा वहाँ पर पहुँचने पर ह्यूलिन ने मेरा सम्मान किया। पुनर्जन्म तथा कर्म सिद्धान्त पर मेरे भाषण सब लोगों को इतने पसन्द आये कि मुझे बार बार वहाँ बुलाया जाने लगा। मैं अपने भाषणों में सदा फकीर बाबा के विषय में ही बोलता था। १९६९ के आरम्भ में ह्यूलिन केसी ने अमेरिका के चालीस चुने हुम डाक्टरों, प्रोफेसरों, मनोवैज्ञानिकों, दूसरे धर्मों में रुचि लेने वाले लोगों तथा कई उद्योगपतियों के साथ विश्व यात्रा का एक आयोजन बनाया। यात्रा में जाने से पहले ह्यूलिन केसी ने मुझसे पूछा, 'क्या हम भारत जाने पर किसी तरह फकीर गाबा का अति 'यार भरा'

प्रेरणा देने वाला पत्र मुझे कुछ ही महीने पहले मिल चुका था, इसलिए मुझे ऐसा लगा कि ये सब घटनाएँ उनकी कृपा के कारण घट रही हैं और उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी सच्ची होने जा रही है और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही।

संक्षेप में, मैंने फकीर बाबा को एक पत्र लिखा, जिसमें ह्यलिन तथा उनके दल की विश्व की यात्रा के सम्बन्ध में लिखा और यह भी लिखा कि वे लोग आपसे मिलने के बहुत इच्छुक हैं और दिल्ली में उनसे मिलना चाहते हैं। सौभाग्यवश जिन दिनों A. R. E. का दल दहली पहुँचा, फकीर बाबा वसन्त के सत्संग का भारत का दौरा करके दहली पहुँचे। प्रोग्राम बहुत सुन्दर बन गया। मेडन होटल देहली में ह्यलिन केसी तथा दल के सभी सदस्यों ने फकीर बाबा के दर्शन किये तथा उनके सत्संग का लाभ उठया। बाद में फकीर बाबा का यह सत्संग 'A word to Americans' नामक पुस्तक में छप गया।

जब ए० आर० ई० का दल अमेरिका पहुँचा तो ह्यलिन केसी ने फकीर बाबा की बहुत प्रशंसा की और यह बताया कि दल के सभी लोग फकीर बाबा की सत्यपरायणता, सरलता, पवित्रता और ऊंचे विचारों से बहुत प्रभावित हुए। ह्यलिन केसी तथा उनके कई साथियों ने मुझे कई बार कहा कि मैं फकीर बाबा को अमेरिका बुलाऊं। जब इस विषय पर बातचीत चल ही रही थी कि मेरी भारत की छुट्टी समाप्त हो गई और जुलाई १९६० में मुझे तीन वर्ष पश्चात् भारत लौटना पड़ा।

एक वर्ष के पश्चात् मुझे फिर एक वर्ष के लिए अमेरिका पढ़ाने के लिए १९७१ में बुलाया गया। भारत में रहने की एक वर्ष की अवधि में मैं फकीर बाबा के दर्शन करने कई बार होशियारपुर तथा देहली गया और उनके सत्संगों का लाभ उठाया। अमेरिका में जाने से पहले एक बार फिर मैं फकीर बाबा के दर्शन करने के लिए होशियारपर गया। इस बार उन्होंने मुझे विशेष स्नेह की दृष्टि से देखा

और आशीर्वाद देते हुए बोले, 'तुम्हारी इस बार की अमेरिका की यात्रा विशेष रूप से सफल रहेगी।'

जून १९७१ में मैं अपनी पत्नी के साथ अमेरिका पहुंचा। मेरे दोनों लड़के पहले से ही अमेरिका में पढ़ रहे थे। वे १९७० में हमारे साथ भारत नहीं लौटे थे। इस बार मुझे जिस कालेज में पढ़ना था, वह वर्जीनिया बीच ए० आर० ई० संस्था से केवल ४५ मील की दूरी पर था। इसलिए ए० आर० ई० में मेरे भाषण और भी अधिक होने लगे और ए० आर० ई० में ऐसे अनेक डाक्टर, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक तथा प्रोफेसर मेरे सम्पर्क में आये, जो मेरे स्थायी मित्र बन गये। मुझे इन अमेरिकन मित्रों पर बहुत गर्व है। जब इनके निःस्वार्थ प्रेम तथा अपने प्रति इनकी श्रद्धा देखता हूं तो ऐसे अनुभव होता है कि वे हमारे सम्बन्धियों से भी अधिक प्रिय हैं। ए० ई० आर० संस्था के साथ-२ वर्जीनिया बीच में और भी कई अनेक ऐसी संस्थाएँ हैं जिनका उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति करना है। उनमें से एक संस्था योग सैण्टर भी है। मेरा सम्पर्क योग सैण्टर को चलाने वाले अति सुन्दर नवयुवक जोजफ फैण्टन से हुआ जो हिन्दू धर्म हिन्दू संस्कृति तथा योग साधना में बहुत रुचि ही नहीं रखता था बल्कि एक साधक भी था। मुझे कई बार योग सैण्टर में भी भाषण देने के लिए बुलाया गया। वहाँ भी मैं हर समय फकीर बाबा की महानता के विषय में कहता। नवयुवक जोजफ ने भी यही इच्छा प्रकट की कि फकीर बाबा को अमेरिका बुलाया जाय ताकि यहाँ के लोग भी उनके सत्संग का लाभ उठा सकें। अतः ए० आर० ई० तथा योग सैण्टर ने मिल कर मेरे द्वारा फकीर बाबा को यहाँ आने का निमन्त्रण भेजा, जिसके फल स्वरूप अप्रैल १९७२ में फकीर बाबा का स्वर्गीय पण्डित रामचन्द के साथ अमेरिका का पहला सत्संग का दौरा सम्भव हुआ। यह दौरा बहुत ही सफल रहा। ए० आर० ई० तथा योग केन्द्र वर्जीनिया बीच में, रोनक तथा लिन्चबर्ग वर्जीनिया के कई चर्चों में और फिलिडलफिया, वाशिंगटन तथा न्यूयार्क में कई

केन्द्रों में फकीर बाबा के प्रभावशाली सत्संग हुए और हजारों लोगों ने उनसे लाभ उठाया।

उनके भाषणों और सत्संगों में आने वाली सभी जनता अमेरिकन नागरिकों की थी। फकीर बाबा ने अनुभव किया कि यहाँ के अधिकतर लोग जिज्ञासु, भले, ईश्वरनिष्ठ, स्वच्छता प्रेमी तथा अनुशासन में विश्वास रखने वाले हैं। पूरे अमेरिका में घूमते हुए जिस वस्तु ने उनको सबसे अधिक प्रभावित किया वह थी इस देश के निवासियों की स्वच्छताप्रियता तथा हर एक वस्तु का भली भाँति आयोजन करना। योग सैण्टर के संचालक जोजफ फैण्टन से वह विशेष कर प्रभावित हुए। कई बार उनके घर गये और उनकी पत्नी डायेन तथा नन्हे बच्चे राम को आशीर्वाद दिया। उनके रहने का प्रबन्ध वर्जीनिया बीच के एक बहुत अच्छे होटल में ए० आर० ई० द्वारा किया गया था, परन्तु फकीर बाबा ने होटल में न रह कर जिज्ञासु सत्संगी के घर रहने की इच्छा प्रकट की। अतः उनके रहने का प्रबन्ध वर्जीनिया बीच के एक रिटायर्ड नेवी के कप्तान जाहन कैयी तथा उनकी पत्नी बेटी कैली के घर करा दिया गया। बैटी कैली रात दिन फकीर बाबा की सेवा में लगी रहती थी। उनकी श्रद्धा जिज्ञासा तथा निःस्वार्थ प्रेम से फकीर बाबा बहुत प्रभावित हुए और प्यार से उन्हें बैटी न कह कर बेटी पुकारने लगे। जीन मैकलैनन नाम की एक और महिला ने भी फकीर बाबा को बहुत प्रभावित किया। जीन मैकलैनन न्यूज वर्जीनिया के एक विख्यात डाक्टर श्री जेजन मैकलैनन की प्रतिभाशालिनी पुत्री थीं। उन्होंने पूरे दो सप्ताह तक अपनी बडी आरामदायक कार में फकीर बाबा, पण्डित रामचन्द और हम दोनों को घुमाया और उन्हीं के कारण ही फकीर बाबा के वाशिंगटन, फिलिडलफिया तथा न्यूयार्क के सत्संग सम्भव हो सके। डा० मेकलैनन फकीर बाबा से बहुत प्रभावित हुए। फकीर बाबा मैकलैनन दम्पति को आशीर्वाद देते रहे। इसके अतिरिक्त फकीर बाबा न्यूजर्सी के टाम क्रास तथा उनकी पत्नी, फारेस्ट वर्जीनिया के विख्यात

डाक्टर बिलियम मेकेव तथा उनकी सुन्दर कलाकार विदुषी पत्नी ऐनिस मेकेव तथा डेटन के प्रसिद्ध डाक्टर हैरो फ्रोनिस्टा तथा उनकी श्रद्धालु पत्नी सिलविया से बहुत प्रभावित हुए। न्यूयार्क न्यूज की एक सुन्दर नययुवती बैटी एटकिन्सन तथा उनके वकील पति स्टुअर्ट एटकिन्सन भी फकीर बाबा के सम्पर्क में आये। बैटी एटकिन्सन तो अपने भारत के दौरे में १९७० में फकीर बाबा से मिल भी चुकी थी और फकीर बाबा ने उन्हें वहाँ एक विशेष सत्संग दिया था। लिन्चबर्ग वर्जीनिया के एक और बड़े स्नेही तथा श्रद्धालु दम्पति श्री जेम्स तथा कैथलीन यूबैंक से भी फकीर बाबा की भेंट हुई। बेडफोर्ड वर्जीनिया के एक महान् कलाकार स्वर्गीय केन कनियर तथा उनकी कलाकार पत्नी मेरी को भी फकीर बाबा ने उनके घर रह कर आशीर्वाद दिया। इसी प्रकार एक अत्यन्त स्नेही और परम श्रद्धालु कलाकार दम्पति स्वर्गीय राबर्ट बिलिन तथा उनकी सुन्दर तथा प्रतिभाशालिनी पत्नी जीन के घर फकीर बाबा दो दिन रहे और उन्हें सत्संग दिया। अपनी तीसरी और चौथी यात्रा में फकीर बाबा का अनेक लोगों से सम्पर्क हुआ, जिनमें से फलोरीडा में सेरासोटा की ग्लोरिया एलब्रिटन; सेण्ड पीटर्जबर्ग के जाहन तथा उनकी पत्नी मारशा तथा ब्रेडिण्टन, फलोरोडा के श्री गिलबर्ट रिजगार्ड मुख्य हैं, फकीर बाबा ने अपने मिलने वाले सभी अमेरिकन सत्संगियों पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनके १९७६, १९७८ तथा १९८० में डा० परसराम अग्रवाल के साथ जो दौरे हुए उनमें सत्संगियों की संख्या बढ़ती चली गई। १९८० में वह अमेरिका में ही नहीं परन्तु इंगलैण्ड, जर्मनी तथा कनाडा में भी सत्संग के लिए गये और सत्संगियों ने उनके सत्संग का लाभ उठाया। उनके इस दौरे से मुझे बहुत ही लाभ हुआ। क्योंकि इस बार वह मेरे घर में काफी समय रहे, उनकी उपस्थिति से मुझे अलौकिक आनन्द ही नहीं मिला बल्कि बहुत से गूढ़ तत्वों का भी ज्ञान मिला। मैंने जब उनके निकट बैठ कर उन्हें एक ही रात को बार-२ दोहराते हुए सुना तो अचानक

एक दिन मुझे उस गुढ़ तत्व का साफ साफ पता चल गया, जिसको समझने के लिए बहुत से विचारकों, सन्तों और ऋषियों ने अपना सारा जीवन लगा दिया था। जिस सत्य को बताने के प्रयत्न में बड़े बड़े दार्शनिकों, पण्डितों तथा धार्मिक नेताओं ने बड़े बड़े पोथे लिख दिये हैं। इसी प्रकार पश्चिम के वर्तमान विचारक भी इसी सत्य को जानने के लिए खोज में लगातार काम कर रहे हैं। परन्तु अन्त में सभी के सभी यही कहते हैं कि परम सत्य अनन्त है, उसको पूर्णतया जाना नहीं जा सकता। इस परम सत्य की व्याख्या करते हुए प्रायः यह देखा गया है कि लगभग सभी ने नकारात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। वेदों में इस व्याख्या को असत् कहा गया है, उपनिषदों में 'नेति नेति' कहा गया है और योरुप के विश्वविख्यात आधुनिक दार्शनिक सार्त्र तथा हैडगर ने उसे 'कुछ नहीं (Nothingness) कहा है। इन नकारात्मक व्याख्याओं को पढ़ने से मनुष्य नास्तिक बन सकता है क्यों कि यदि वह परम सत्य 'कुछ नहीं' है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसका अस्तित्व ही नहीं है और वह कल्पनामात्र ही है। भगवान् बुद्ध ने भी शून्यता शब्द का प्रयोग करके लोगों को इसी भ्रम में डाल दिया कि ईश्वर है ही नहीं

परन्तु जब मैंने फकीर बाबा से उनके अपने अनुभव के आधार पर 'कुछ नही' की व्याख्या सुनी, तो मुझे ज्ञान हो गया कि 'कुछ नहीं का अर्थ नास्तिकवाद नहीं हैं। फकीर बाबा की व्याख्या इस प्रकार है:—

'अब मैं शब्द और प्रकाश से भी परे चला जाता हूँ। सप्ताह में एक बार और कभी दो बार, जब मैं शब्द और प्रकाश से भी ऊपरे चला जाता हूं, तो में उश वस्तु को देखता हूं, जो इस शब्द तथा प्रकाश का अनुभव करने वाली है, उस समय मैं उस अवस्था में पहुंच जाता हूँ जहाँ पर ऐसा लगता है कि मैं चेतन के समुद्र का एक बुलबुला हूं। इस स्तर पर मैं अपने आप को खो देता हूं। मैं नहीं रहता। वहाँ पर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

न देखने वाला होता है और न दिखने वाली कोई वस्तु। वहाँ ,कुछ
नहीं' होता। परन्तु फिर मैं उस 'कुछ नहीं' की अवस्था से वापिस आ
जाता हूं, तो इससे यह प्रमाणित होता है कि वह 'कुछ नहीं, शून्यता
नहीं है। यदि उस अवस्था का कोई अस्तित्व ही नहीं अथवा वह 'कुछ
नहीं' या बिलकुल खाली है, तो मैं उससे वापिस कैसे आता हूं।

फकीर बाबा की इस गूढ़ सुन्दर व्याख्या से मेरा अपना 'कुछ नहीं'
का संशय एक दम दूर हो गया और मुझे इसमें तनिकमात्र भी संन्देह
नहीं रहा कि फकीर बाबा सद्गुर अथवा परम सत्ता का अवतार हैं।

इस बार मेरी फकीर बाबा से और भी कई गूढ़ दार्शनिक और
तत्व सम्बन्धी विषयों पर चर्चा हुई और उन्होंने मेरे सहे संशयों को भी
दूर कर दिया। उन्होंने मुझे कुछ वर्ष और अमेरिका में रहने की आज्ञा
दी और कुछ और तत्व सम्बन्धी ऐसी पुस्तकें लिखने को कहा जिनसे
पश्चिमीय सत्संगियों को भी वास्तविक सच्चाई का ज्ञान हो। मैंने भी
यही अनुभव किया कि अब मुझे केवल बौद्धिक स्तर तक सीमित
पुस्तकें न लिख कर ऐसी पुस्तकें लिखनी चाहिए, जिनमें फकीर बाबा
की व्याख्याओं के आधार पर ईश्वर, धर्म, मनुष्य के सच्चे रूप और
उसके जीवन के उद्देश्य के बारे में सरल भाषा में व्याख्याएँ की जायें।
मैंने यह निश्चय किया कि सबसे पहले दो पुस्तकें लिखी जायँ, जिनमें से
पहली पुस्तक 'सत् पुरुष, चमत्कारी फकीर बाबा' और दूसरी
धर्मों से परे धर्म' हो फकीर बाबा ने मेरे इस विचार को पसन्द किया
और मुझे इस कार्य को सम्पन्न करने का आशीर्वाद दिया।

परम दयालु फकीर बाबा का सन्देश केवल भारत के लिए ही
नहीं, अपितु मानता मात्र के लिए महत्व रखता है। फकीर बाबा विश्-
वशान्ति, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सभी धर्मों के मेल जोल के लिए
पूरा प्रयास कर रहे हैं। वह विश्वशान्ति के पथ प्रदर्शक हैं और निराशा
में आशा, अन्धकार में प्रकाश और विषमता में समता लाने वाले युगा
... जी ने विश्व में सच्चाई फैलाने और शिक्ष

को इस प्रकार बदल देने का आदेश दिया था कि मानवता धर्म के नाम पर टुकड़े-२ होने से बच जाय। दाता दयाल स्वय १६११ में इसी उद्देश्य से अमेरिका आये थे। उनको पूरी आशा थी कि उनके परम शिष्य फकीर बाबा इस सच्चाई को विश्वकल्याण के लिए फैलायेंगे, क्योंसि वह यह जानते थे कि फकीर बाबा अपने सच्चे अनुभव के आधार पर ही जगत् का कल्याण करेंगे।

अगले अध्याय में यह बयाया जायेगा कि किस प्रकार फकीर बाबा के युवावस्था काल तथा दाता दयाल से दीक्षा लेने के पश्चात के चमत्कारी अनुभवों के कारण (उन्हें) वह सच्चा ज्ञान मिला, जिसका वह मानवकल्याण के लिए प्रचार कर रहे हैं।

——

युवावस्था के चमत्कारी अनुभव और सच्चे ईश्वर को मिलने का आह्वान।

इस पुस्तक को इस उद्देश्य से लिखा जा रहा है कि उस परम तत्व की सच्चाई खोल कर रख दी जाय, जिसे ईश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म, परम पुरुष अक्षवा राधास्वामी दयाल कहा जाता है। ईश्वर के हजारों नाम हैं। पहले भी बताया जा चुका है कि फकीर बाबा ने परम सत्ता की व्याख्या अपने निजी आधार पर ही दी है। अब तो वह उस अवस्था पर पहुँच गये हैं, जहाँ वह शरीर, मन और आत्मा से भी ऊपर उठ गये हैं। जिन घटनाओं को हम चमत्कार कहते हैं, वे इन्हीं तीन स्तरों तक ही घटित होते हैं। फकीर बाबा इस चमत्कार व सिद्धियों के स्तरों को पार कर चुके हैं। वह आश्चर्यों के आश्चर्य वाली उस सिद्ध अवस्था पर पहुंच चुके हैं, जिसे परम धाम कहा जाता है। वास्तव में यह

अवस्था हर प्रकार की व्याख्या से परे हहै, ालांकि सभी सन्तों और सिद्धों ने भाषा द्वारा इसे स्पष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया है। केवल सन्त ही इस उच्चतम अवस्था को पा सकता है या यूं कहो कि जब व्यक्ति इस अवस्था को पाता है, तभी वह सच्चा सन्त कहलाता है।

जो लोग इस परम धाप को प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए फकीर बाबा का जीवन तथा उनका काम प्रेरणा का आदर्श है। भगवद्गीता में भी कहा गया है कि सत् पुरुष जैसा व्यवहार करता है, जन साधारण उसी का ही अनुकरण करते हैं। जिस आदर्श को वह महान् व्यक्ति अपने उदाहरण के द्वारा सामने रखते हैं, आम लोग उसी को ही जीवन पर लागू करते हैं। केवल इतना ही नहीं महान् व्यक्ति और सन्त अपने अनुभय से दूसरों को लाभ पहुँचाते है। उनके मन में यह प्रवल इच्छा रहती है कि वह दूसरों की हहायता करें, क्योंकि परम सत्ता के साथ एक हो जाने के कारण, उसके दिल से दया की धारा निरन्तर बहती रहती है, इसका मतलब यह नहीं कि उनको दूसरों से लगाव हो जाता है। उनकी लोगों की सहायता करने की प्रबल इच्छा उनके मन से अपने आप ही उमड़ती है। यह बताने के लिए कि सन्तों से दया की भावना और प्रेम किस प्रकार अपने आप उमड़ता है. फकीर बाबा अनेकों उमाहरण देते हैं। जब लोग फकीर बाबा की उपस्थिति के कारण, उनके आशीर्वाद के कारण तथा उनके रूप के प्रकट होने के कारण रोग आदि से मुक्त होकर लाभ उठाते हैं, फकीर बाबा इसका कोई श्रेय नहीं लेते। वे तो सदा यही करते हैं कि उन्हें तो अपने रूप प्रकट होने का ज्ञान ही नहीं होता किन्तु फिर भी वह लोगों को अपने आशीर्वाद से लाभ उठाने से रोकते नहीं। सतना ही नहीं जैसा कि हम आगे चल कर देखेंगे, फकीर बाबा लोगों को इस बात का प्रोत्साहन देते हैं कि वे उचित रूप से अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए सदा अशीर्वाद बने रहें।

जब फकीर बाबा यह कहते हैं कि उनको अपने रूप के प्रकट होने का कोई ज्ञान नहीं होता और साथ ही साथ यह भी कहते हैं कि ऐसे अनुभव लोगों के मन का भुलावा होते हैं तो ऐसा कहने से उनका अभिप्राय यह नहीं होता कि ये घटनायें सच्ची नहीं हैं। यह तो लोगों को यह बताना चाहते हैं। कि इन घटनाओं के चक्कर में इस बात को नहीं भूल जाना चाहिए कि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य मन की सिद्धियों से परे है यदि चमत्कार बिलकुल झूठी और निरर्थक घटनायें होती, तो उन्हें कभी घटित ही नहीं होना चाहिए था। आम लोगों के लिए उनके जीवन की घटनाओं की समस्याओं का हल होना, रोगों से मुक्त होना परीक्षा में सफल होना और माली हालत का सुधारना आदि ऐसी घटनायें हैं, जो बहुत महत्व रखती हैं। यदि ये समस्यायें हल न हों और मनुष्य का मन इनके कारण दुःखी रहे तो वह कभी भी मन के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता। वह साधना नहीं कर सकता और उस शब्द और प्रकाश का अनुभव नहीं कर सकता, जिसके बिना मन के स्तर से ऊपर उठना असम्भव है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए मन की शान्ति बहुत जरूरी है। इसी कारण फकीर बाबा दुःखी लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए और उनकी चिन्ताओं को दूर करने के लिए उनके विश्वास को बढ़ावा देते हैं, जिसके कारण उनके काम बन जाते हैं। जब फकीर बाबा की आज्ञा पर चलने के कारण किसी के मन की इच्छा पूरी हो जाती है, तो उस व्यक्ति के मन को सन्तोष मिल जाता है। यह तो ठीक है कि सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति समारा जीवन का परम लक्ष्य नहीं है किन्तु यह भी सत्य है कि ऐसी पूर्ति के बिना मन को शान्ति नहीं मिल सकती। दूसरे शब्दों में, सिद्धियों से परे की अवस्था, सिद्धियों से गुजरने के बिना नहीं पाई जा सकती। मन से परे की अवस्था, मन को अशान्ति से मुक्त करने के बिना नहीं मिल सकती। मन की अशान्ति, उसके कारण को दूर किये बिना नहीं हट सकती क्योंकि आम तौर पर मन की अशान्ति का कारण कोई न कोई

इच्छा हीं होती है। इसलिए उसकी पूर्ति करने से ही उस अशान्ति को दूर किया जा सकता है। सन्त गति प्राप्त होने के पश्चात् तो इच्छाएँ रहती ही नहीं। फकीर बाबा उस परम सन्त की अवस्था पर पहुंच कुके हैं और सिद्धियों की अवस्था से ऊपर उठ चुके हैं, परन्तु इस अवस्था पर पहुंचने से पहले, उन्होंने न ही केवल युवावस्था में इन चमत्कारों का अनुभव किया था, अपितु दाता दयाल से दीक्षा लेने से पहले और बाद में भी चमत्कारों को घटित भी किया था।

उनकी असंख्य चमत्कारी घटनाओं में से कुछ का वर्णन इस अध्याय में देना ठीक होगा। जग शुरू-शुरू में इन चमत्कारी घटनाओं का उन्होंने अनुभव किया, उस समय तो वह यह समझते थे कि ये घटनायें किसी बाहरी कारण से घटित तो रही है और वास्तविक है। किन्तु अब वह ऐसी घटनाओं को भुलावा इसलिए कहते हैं, क्योंकि अब उन्हें यह ज्ञान हो गया है कि ये घटनायें किसी बाहरी शक्ति के कारण घटित नहीं होती। ये केवल हमारे मन अथवा विश्वव्यापी मन क्षथवा उस काल का खेल है, जो ईश्वर का सच्चा रूप नहीं है। हमारी आत्मा का सच्चा रूप हमारे मन से उसी प्रकार परे है, जैसे ईश्वर का सच्चा रूप काल से परे है। हमारी आत्मा का असली रूप सुरत, वह तत्व है, जो उस आत्मा से परे है, जिसे कारण शरीर कहा जाता है। इसी प्रकार सच्चा ईश्वर अथवा सत् पुरुष उस प्रकाश से परे है, जो विश्व का सर्वव्यापी कारण है।

जब फकीर बाबा मन के स्तर से ऊपर नहीं उठे थे और जब वह भगवान् राम और भगवान कृष्ण के रूपों को ईश्वर का अन्तिम रूप मानते थे, उस समय उन्हें अनेकों चमत्कारों के अनुभव होते थे। उनकी भगवान् राम तथा कृष्ण के साक्षात् दर्शन करने की प्रबल इच्छा थी, उन्हें उनके न ही दर्शन हुए अपितु बातचीत भी हुई। उनमें से एक घटना ऐसी घटी; जिसने उन्हें सच्चे ईश्वर की खोज में लग जाने को प्रेरित किया। पिछले अध्याय में यह बताया जा चुका है कि फकीर

बाबा को दो चमत्कारी अनुभव हुए। एक में तो उन्होंने उस साधु से भेंट की थी जिन्होंने उन्हें बताया कि ईश्वर ने उनके लिये मनुष्य का रूप धारण कर लिया है और दूसरे में उन्होंने दाता दयाल जी महाराज के दर्शन किये थे। क्योंकि इन दोनों चमत्कारी अनुभवों ने उन्हें अन्त में सच्चे ईश्वर का अनुभव अराया और बन्हें सत्तगुरु वक्त या युग पुरुष बना दिया। इसलिये इन घटनाओं को असत्य नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार फकीर बाबा की भगवान् कृष्ण से वह भेंट, जिसका नीचे उल्लेख क्रिया जा रहा है झूठी नहीं कही जा सकती। यदि फकीर बाबा को यह अनुभव नहीं होता तो वह चमत्कारों से कभी ऊपर न उठ सकते। दूसरे शब्दों में, फकीर बाबा के जीवन में घटित चमत्कार उनके जीवन रूपी जंजीर की वे कड़ियाँ हैं, जो उसे जीवन्मुक्त अवस्था से जोड़ती हैं।

उनके युवावस्था की भक्ति के दिनों में उन्हें एक बार उस रेलवे स्टेशन के निकट खुले मैदान में भगवान् कृष्ण के दर्शन हुए जहाँ पर वह स्टेशन मास्टर का काम करते थे। भगवान कृष्ण उनके आगे आगे चल रहे थे, फकीर बाबा उनके पीछे चलते चलते बातें कर रहे थे। जब वह कुछ दूरी तक चले, तो भगवान् कृष्ण ने फकीर बाबा को पृथ्वी पर पड़े हुए गोबर को खा लेने को कहा। फकीर बाबा ने शीघ्र ही उनकी आज्ञा का पालन किया, पर बाद में सोच में पड़ गये। उन्होंने बहुत से ऐसे भक्तों के जीवन चरित्र पढ़े थे, जिन्हें ईश्वर रा साक्षात्कार हुआ था जहां भगवान् ने किसी को गोबर खाने को कहा (यहां पर यह बता देना उचित होगा कि गुजरात के कृष्णभक्तों के साथ ऐसी कई घटनाएँ घट चुकी है, जिनमें भक्तों को भगघान ने गोबर खाने को कहा है। क्योंकि फकीर बाबा ने ऐसी चटनाओं के विषय में कभी सुना नहीं था, इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस घटना के पीछे कोई रहस्य था। इससे फकीर बावा यह सोचने लगे कि क्या भगवान कृष्ण का दर्शन सच्चे ईश्वर का दर्शन था? इसलिए उनकी ईश्वर को मनुष्य के

रूप में देखने की इच्छा और भी बढ़ गई। उनकी यह इच्छा हिन्दू धर्म के विचारों के विरुद्ध नहीं थी। तुलसीदास जी के रामायण में लिखा है:—

'नाना विधि राम अवतारा,
रामायण शत कोटि अपारा।'

यही बात भगवद्गीता में भी कही गई है।

यद्यपि उस समय फकीर बाबा ईश्वर के अनुभव की अन्तिम अवस्था तक नहीं पहुँचे हुए थे, किन्तु उनकी ईश्वर को मनुष्य के रूप में देखने की चाह के पीछे एक उद्देश्य था। यह उद्देश्य उस सच्चे ईश्वर के दर्शन करने का था, जो हर युग में अवतार लेता है, जो अनन्त है और देश-काल की सीमाओं से परे है। फकीर बाबा भगवद्गीता के उस कथन का विरोध नहीं करते, जिसमें यह कहा गया है कि ईश्वर समय की परिस्थितियों के अनुसार अवतार लेते हैं। फकीर बाबा कहते हैं कि जब रावण और कंस जैसे दुष्ट व्यक्ति अत्याचार करते हैं और दुराचार बढ़ जाता है, उस समय शक्ति का प्रयोग करके, पाप को मिटाने के लिए ईश्वर अवतार लेते हैं। इसीलिए सी भगवान् राम का त्रेता युग में और भगवान कृष्ण का द्वापर युग में अवतार हुआ।

फकीर बाबा यह भी बताते हैं कि सन्तों का अवतार उस समय होता है जब धार्मिक नेता आम लोगों को सच्चा ज्ञान नहीं देते और यह नहीं बताते कि सच्चा ईश्वर मानसिक स्तर से परे हैं। इसी कारण यह कहा जा सकता है कि ईश्वर के सच्चे रूप को बताने के लिए परम तत्व की धारा ने दाता दयाल जी महाराज और उनसे पहले राय सालिग राम जी महाराज और हुजूरी जी महाराज की भाँति फकीर बाबा को, हमारे समय की आवश्यकता के अनुसार सत्य के अवतार के रूप में प्रकट किया।

एक दृष्टि से फकीर बाबा पहले तीन सन्त अवतारों के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनसे भी एक पग आगे बढ़े हैं। इस बात को अन्तिम

अध्याय में स्पष्ट किया जायेगा) किन्तु दूसरी दृष्टि से फकीर बाबा का अनामी धाम से इस पृथ्वी पर जन्म लेना उस ईश्वर के उद्देश्य के साथ जुड़ा हुआ है, जिसे सभी धर्मों के अवतारों ने दोहराया है। भगवान् राम और कृष्ण के दर्शन करने के पश्चात भी ईश्वर को मनुष्य के रूप में देखने की इच्छा फकीर बाबा के मन मैं क्यों बनी रही।

आरम्भ में फकीर बाबा की भगवान राम और कृष्ण के प्रति दृढ़ श्रद्धा ने यह स्पष्ट किया कि किसी भी अवतार का सच्चा भक्त, सत्य का चमत्कार के रूप में अनुभव करता है। इस अनुभव ने फकीर बाबा को यह कहने पर विवश किया है कि हिन्दू धर्म और सन्तमत में विशेष अन्तर नहीं है। सत्य तो यह है कि चमत्कार के स्तर के अनुभव के पश्चात ही मनुष्य को सिद्धियों से ऊपर उठ जाने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य सन्त पद को तभी प्राप्त कर सकता है, जब वह किसी न किसी रूप में ईश्वर की भक्ति करे। किन्तु वह भक्ति दृढ़ होनी चाहिए। क्योंकि फकीर बाबा का भगवाध राम और कृष्ण में पक्का विश्वास था इसलिए उन्होने न ही केवल चमत्कारों का अनुभव किया, किन्तु स्वयं भी चमत्कारो को घटित किया।

उनके द्वारा घटित हुए चमत्कारों में से निम्नलिखित घटना बहुत रोचक है :—

'एक बार जब फकीर बाबा एक छोटे से शहर में स्टेशन मास्टर थे, वह प्रति सप्ताह अपने घर पर रामायण का अखण्ड पाठ रखा करते थे। पाठ के समाप्त होने पर सभी सत्संगियों को हलवे का प्रसाद बाँटा जाता था। उस शहर में कुछ कट्टर आर्यसमाजी भी रहते थे। वे इस रामायण पाठ के बहुत विरोधी थे और फकीर बाबा के इस काम की हंसी उड़ाना चाहते थे। एक बार जब पाठ हो रहा था तो उन आर्य-समाजियों ने फकीर बाबा को तंग करने का उपाय सोचा। अखण्ड पाठ के समाप्त होने से कुछ ही देर पहले शहर की मिल में काम करने वाले मजदूरों की छुट्टी हुई थी, आर्यसमाजियों ने एक सौ के लगभग

मजदूरों को फकीर बाबा के घर अखण्ड पाठ शामिल होने के लिए भेज दिया। उन्हें आसा थी कि फकीर बाबा का थोड़ा सा प्रसाद इन सब लोगों को बांटने के लिए काफी नहीं होगा और समय की कमी के कारण और प्रसाद तैयार भी नहीं किया जा सकेगा और इस प्रकार फकीर बाबा की हंसी उड़ाई जायेगी। जब मिल में काम करने वाले सब मजदूर पाठ में बैठ गये ओर पाठ समाप्त होने का समय निकट आया तो फकीर बाबा के एक सहयोगी ने घबरा कर कहा—हमारे पास तो हलवे का एक कटोरा मात्र ही है। ये लोग सौ से भी अधिक हैं, हमें तो इनके आने की आशा ही नहीं थी। इस थोड़े से प्रसाद को हम इन सब में कैसे बांट सकते है? फकीर बाबा ने प्यार और शान्ति से उत्तर दिया—चिन्ता मत करो। प्रसाद के कटोरे को कपड़े से ढक कर सब को उतना ही प्रसाद बांटते जाओ जितना हमेशा देते हो, कंजूसी मत करो, मालिक की मर्जी से सब ठीक हो जायेगा। उस सहयोगी ने वैसा ही किया। जब सब लोग प्रसाद ले चुके और कटोरे के ऊपर से हटाया गया तो यह देख कर सब चकित हो गये कि कटोरा ज्यों का त्यों हलवे से भरा हुआ था। इस घटना से वे कट्टर आर्य-समाजी दंग रह गये और उन्होने फकीर बाबा का विरोध करना छोड़ दिया।'

ठीक इससे मिलती जुलती घटना मेरी छोटी बहिन श्रीमती कृष्णा सारावगी के घर पर बम्बई में घटित हुई। एक बार जब फकीर बाबा कृष्णा के घर सत्संग दे रहे थे, तो कृष्णा ने पचास सत्संगियों को खाने के लिए बुलाया हुआ था। क्योंकि फकीर बाबा के बम्बई में आने और कृष्णा के घर ठहरने का समाचार बहुत लोगों को मिल चुका था इस लिए उनके बहुत से सत्संगी बिना बुलाये ही कृष्णा के घर उनके सत्संग को सुनने के लिए पहुँच गये। कृष्णा का कहना है कि जब खाने का समय आया तो वहां पचास के स्थान पर एक सौ पचास सत्संगी थे। पहले तो वह घबरा गई कि इन सब को खाना कैसे खिलाया जायेगा।

उसे फकीर बाबा पर अगाध विश्वास रहा हैं, इसलिए उसने मन ही मन में फकीर बाबा से प्रार्थना की कि वह उसकी लाज बचायें और अपने रसोइये को कहा कि खाना देना शुरू कर दो। जब सभी लोगों को खाना दे दिया गया तो कृष्णा को स्वयं भी इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तरकारियों और पूरी के सभी बर्तन इतने सत्संगियों को खाना बाँट देने के बाद भी ज्यों के त्यों भरे हुए थे। कृष्णा ने इस चमत्कारी घटना के विषय में मुझे स्वयं ही बताया।

य दोनों घटनाएँ ईसाईयों की बाईबल के न्यूटेंस्टामेण्ट में लिखी हुई उस घटना से मिलती-जुलती हैं जिसे ईसा मसीह ने एक बार हजारों लोगों को थोड़े से भोजन को ढक कर बंटवाया था और वह कम नहीं हुआ था। ऐसी चमत्कारी घटनाओं का लगभग सभी धर्मों में उल्लेख है। इन घटनाओं से यह प्रमाणित होता है कि अगाध विश्वास के कारण व्यक्ति का मन ही ऐसे तथाकथित चमत्कारों को घटित कर सकता है।

आम तौर पर जब कोई भक्त अपने धर्म में विश्वास रखने के कारण चमत्कारों का अनुभव करता है तो वह कट्टर हो जाता है, इस कट्टरता में दो कमियां रह जाती हैं। पहली कमी यह होती है। कि कट्टर व्यक्ति की आत्मिक उन्नति समाप्त हो जाती है। वह तंग दिल होने के कारण ईश्वर के केवल एक विशेष रूप को ही सच्चा मान कर ईश्वर की अनन्ता को समझ नहीं सकता और उसका ज्ञान सीमित रह जाता है। दूसरी कमी यह होती है कि वह सदा इस भुलावे में रहता है कि चमत्कार का कारण उस ही विशेष रूप की शक्ति है, जो उसके मन के अन्दर न होकर कहीं बाहर से आती है। अन्त में इसी कट्टरता के कारण व्यक्ति का विश्वास टूट सकता है। जब तक ईश्वर अथवा गुरु का विशेष आकार विश्वास करने वाले कट्टर व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति करता रहता है तब तक तो उसका विश्वास ज्यों का त्यों बना रहता है, किन्तु जब ऐसे अचानक घटने वाले चमत्कार, अन्धविश्वास

होने के कारण लगातार नहीं घटते तो उस व्यक्ति का विश्वास टूट जाता है। उसका कारण यह है कि अन्धविश्वास रखने वाला कट्टर व्यक्ति स्वार्थी होता है, वह केवल सांसारिक सुखों को पाने के लिए ही भक्ति करता है। किन्तु वह व्यक्ति जो ईश्वर प्राप्ति के लिए ही साधना करता है अपने विश्वास में दृढ़ रहता है। चमत्कारी घटनाओं का अनुभव तो उसे भी होता है, किन्तु वह उनकी सीमा को जानते हुए उनसे ऊपर उठ जाता है।

फकीर बाबा के सम्बन्ध में चमत्कारी अनुभवों ने उनकी आत्मिक उन्नति में सहायता इसलिए दी है कि उन्होंने सच्चे ईश्वर के अनुभव करने के उद्देश्य को सदा सामने रखा है। उन्होंने मन की शुद्धि के लिए सदा नैतिक जीवन को अपनाया है और दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा का पालन किया है। यह सत्य है कि उन्होंने चमत्कारों से ऊपर उठ जाने की अवस्था का अनुभव बाद में किया। किन्तु युवावस्था में भी वह इस अनुभव के लिए तैयार हो रहे थे। दाता दयाल जी से दीक्षा लेने के बाद भी उन्हें मुसीबत के समय अपने गुरु के रूप के प्रकट होने के अनेकों अनुभव हुए। फकीर बाबा के इन निजी तथाकथित चमत्कारी अनुभवों में से दो अनुभव ऐसे हैं, जिनका यहाँ पर उल्लेख करना उचित रहेगा। एक घटना तो बगदाद में घटित हुई और दूसरी भारत में। पहली घटना के घटित होने से उन्हें यह ज्ञान हो गया कि दाता दयाल जी महाराज के रूप का प्रकट होना फकीर बाबा के अपने ही मन का खेल था। इस ज्ञान के हो जाने के बाद उन्होंने सच्चे ईश्वर के अनुभव करने की कोशिश को जारी रखा। दूसरे अनुभव ने उन्हें इस बात की प्रेरणा दी कि वह जीवनमुक्त की अवस्था प्राप्त करने के लिए प्रकाश और शब्द से भी ऊपर उठ जाय। अब इन दोनों महत्त्वपूर्ण अनुभवों अथवा चमत्कारी गटनाओं का उल्लेख करना उचित होगा।

१९१९ में फकीर बाबा पहले विश्वयुद्ध के दौरान में ब्रत्तानिया की फौज में रेलवे के तार विभाग में ईराक में इन्स्पैक्टर का काम कर

रहे थे। उनका हैड क्वार्टर दीवानिया में था। उन्हीं दिनों बदु नामक जाति ने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह की चटना में ही फकीर बाबा को वह चमत्कारी अनुभव हुआ जिससे उन्हें बाद में चल कर यह ज्ञान हुआ कि गुरु का रूप मन के अन्दर से प्रकट होता है। उन्होंने उस घटना का उल्लेख अपनी जीवनी में इस प्रकार बताया है।

'विद्रोहियों ने हमीदिया के रेलवे स्टेशन पर भारी हमला किया। उन्होंने स्टेशन के सभी कर्मचारियों को मौत के घाट उतार दिया और स्टेशन को आग लगा दी। मैं दीवानिया रेलवे स्टेशन पर काम करता था। वहाँ से फौज के एक दस्ते को फौरन हमादिता भेजा गया और मुझे भी वहाँ स्टेशन मास्टर का काम सम्भालने के लिए भेज दिया गया। हमारे सैनिकों ने खाइयों में तारें बिछा दी और उन्हीं खाइयों में से शत्रु से लड़ाई करने लगे। लड़ाई बहुत जबरदस्त हुई। दोनों तरफ से बहुत से आदमी मारे गये। हमीदिया में हमारे केवल ३५ सैनिक और एक सूबेदार मेजर ही रह गये और बाकी सैनिकों को दीवानिया इसलिए भेज दिया गया कि वे वहां शत्रु का मुकबला करें।

रात के समय विद्रोहियों ने हम पर हमला किया। यद्यपि हमारे सैनिक संख्या में बहुत ही कम थे, फिर भी उन्होंने डट कर मुकाबला किया। हमारे सैनिकों में से केवल एक ही घायल हुआ जब कि शत्रुओं की भारी हानि हुई, क्योंकि वे तो हमला कर रहे थे और हम खाइयों में छिप कर अपने बचाव वे लिए लड़ रहे थे। जब कुछ समय के लिए गोलियाँ चलानी बन्द हो गई तो सूबेदार मेजर ने मुझे आ कर यह कहा कि मैं दीवानिया के हैडक्वार्टर पर यह सूचना दे दूँ कि 'हमारा बारूद गोलियाँ आदि समाप्त होने वाला है और यदि हमें और सैनिक और युद्ध का सामान शीघ्र ही नहीं पहुंचा, तो हम एक घण्टे से अधिक लड़ाई नहीं कर सकेंगे। यह सहायता प्रातः से पहले-२ पहुंचनी चाहिए नहीं तो हम में से कोई भी जीवित नहीं रहेगा।

मैंने तार के द्वारा यह सन्देश हैडक्वार्टर भेज दिया। स्थिति बहुत ही गम्भीर थी और हम सभी अनुभव कर रहे थे कि हमारा अन्त आने वाला है मुझे भी मौत के डर से एक धक्का लगा। इसी डर की स्थिति में जाग्रत अवस्था में ही हजूर दाता दयाल जी मेरे सामने प्रकट हुए और कहने लगे, 'शत्रु आयेंगे जरूर, पर वे हमला नहीं करेंगे वे अपने साथियों की लाशों को उठाने आयेंगे। उन्हें वे लाशें ले जाने दो। तुम अपने बारूद को उस समय तक नष्ट नहीं करो जब तक कि वे खाइयों के बिलकुल पास नहीं आ जाय।'

मैंने सूबेदार मेजर को बुलवाया और अपने गुरु के प्रकट होने तथा उनके आदेश की सारी बात उन्हें सुना दी। सूबेदार मेजर ने दाता दयाल जी के आदेश को पूरी तरह से माना। शत्रुओं के सैनिक आये और हमारे ऊपर हमला किये बिना अपने साथियो की लाशों को ले कर चले गये। दूसरे दिन प्रातः छः बजे हमारे हवाई जहाजों ने ऊपर से आवश्यक बारूद और लड़ाई की सामग्री फैंकी। हमारा डर दूर हो गया, हमें साहस मिला और हम सुरक्षित हो गये।'

इस घटना के तीन महीने बाद जब युद्ध बन्द हो गया तो फकीर बाबा वापिस बगदाद गए, जहाँ पर उन्हें दूसरे सत्संगियों ने यह बताया कि युद्ध क्षेत्र में फकीर बाबा के रूप ने कैसे उन्हें मौत के मुंह से निकाला था। जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि इस अनुभव व से फकीर बाबा को यह ज्ञान हो गया कि जो व्यक्ति ईश्वर का जिस रूप में ध्यान करता हैं, वही रूप ही उस भक्त की सहायता करता है।

हालाँकि इस तथाकथित चमत्तरी अनुभव के बाद भी फकीर बाबा दाता दयाल जी महाराज की तन, मन, धन से सेवा करते रहे, किन्तु उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो गया था कि गुरु का रूप चेले के भाव के अनुसार ही प्रकट होता है। फिर भी उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान नहीं हुआ था कि फकीर बाबा स्वयं ही दाता दयाल वी का रूप है।

यह ज्ञान और उस सच्चे ईश्वर का ज्ञान, जो काल और माया से

परे है, उन्हें पूरी तरह से उस समय प्राप्त हुआ जब हर प्रकार के चमत्कारी अनुभवों से उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि दुखी लोगों की सहायता करने वाला फकीर बाबा का रूप सत्संगियों के मन का ही विश्वास है। दाता दयाल जी महाराज ने तो उन्हें १९२१ में ही उनकी अनेक कविताओं के द्वारा यह बता दिया था कि फकीर स्वयं ही सत् पुरुष हैं। किंतु फकीर बाबा को यह ज्ञान काफी समय के बाद ही आया इसी सम्बन्ध में फकीर बाबा लिखते हैं कि १९२१ में जब वह बगदाद से वापिस आने के बाद दाता दयाल जी के पास ठहरे, तो उन्होंने दाता दयाल जी की तन, मन और धन से बहुत सेवा की किन्तु फिर भी असली भेद को नहीं समझ सके फकीर बाबा के शब्दों में:—

'प्रेम और भक्ति में चूर मैं अपने आध्यात्मिक गुरु की साक्षात पूजा करने के लिए पहले की भांति राधास्वामी धाम पहुँचा। मैंने उनके चरणों में एक सिंहासन, जरी के कपड़े, चाँदी के वर्तन और चाँदी का हुक्का (जिन पर मैंने हजारों रुपये खर्च किये थे) भेंट किये। मैंने बहुत ही प्रेम और मस्ती से परम श्रद्धा के भाव में दाता दयाल जी की पूजा की। मैं उनके पास लगभग ४५ दिन तक रहा। उन्हीं दिनों के दौरान में दाता दयाल जी महाराज ने मेरे अज्ञान को दूर करने के लिए मुझे ही सम्बोधित करके बहुत सी कविताएँ लिखीं। परन्तु उस समय मैं उन कविताओं के गूढ़ रहस्य को समझ नहीं सका। आज मैं उनके रहस्य को समझ गया हूं और अब अनुभव करता हूं कि उस समय मैं अज्ञानी था।'

यही कारण है कि दाता दयाल जी महाराज ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि फकीर बाबा को समझ आने पर उनके अपने ही सत्संगियों द्वारा पूरा ज्ञान प्राप्त होगा। दूसरे शब्दो में सिद्धियों से परे की अवस्था को पाने के लिए यह आवश्यक था कि फकीर बाबा सिद्धियों के अनुभव से गुजरें। इसी सम्बन्ध में उस चमत्कारी घटना का यहां कथन करना ठीक रहेगा, जो फकीर बाबा के साथ उस समय घटित हुई जब वह

पंजाब में स्टेशन मास्टर थे। यह उस समय की बात है जब वह एक ऐसे जंक्शन स्टेशन पर काम करते थे, जहाँ तीन लाइनों से तीन प्लेट-फार्मों पर गाड़ियाँ आती थीं। ऐसे स्टेशनों पर नियुत स्टेशन मास्टर को सदा बहुत सतर्क रहना पड़ता है। गाड़ियों को लाईन क्लीयर देने में जरा सी भूल से भारी दुर्घटना हो सकती है। एक दिन जब फकीर बाबा उसी स्टेशन पर काम कर रहे थे एक भारी तूफान आया और सभी रेलवे के सिगनल टूट गये। तीनों लाइनों पर आने वाली गाड़ियों का समय आ गया। आँधी तूफान और बर्फ के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। फकीर बाबा स्टेशन पर खड़े इस चिन्ता में दुःखी थे कि गाड़ियों को सिगनल से परे कैसे सूचना भेजी जाय। ऐसे अवसर पर इन्जन ड्राईवर सिगनल डाऊन न होने पर, कभी गाड़ी को प्लेटफार्म पर ला सकता है, जब उसे स्टेशन मास्टर का लिखा हुआ मीमो मिल जाय उस समय आँधी और तूफान की हालत में किसी भी कर्मचारी को मीमो दे कर सिगनल के पार तक भेजना सम्भव नहीं था। इसी चिन्ता में बहुत दुःखी हो कर फकीर बाबा आँखें बन्द करके गुरु का ध्यान करते हुए चुप चाप बैठ गये। लगभग १५ मिनट के बाद जब उन्होंने आँखें खोली तो क्या देखते हैं कि तीनों की तीनों रेलगाड़िया सुरक्षित अपने-अपने स्थान पर खड़ी हैं। उन्हें यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। जब उन्होंने तीनों गाड़ियों के ड्राईवरों के पास पहुंच कर यह पूछा कि सिगनल डाऊन न होते हुए भी वे प्लेटफार्म पर गाड़ियों को कैसे ले आये ? तीनों ड्राईवरों ने अलग-अलग यही उत्तर दिया 'स्टेशन मास्टर साहब ! आप क्या मजाक कर रहे हैं। यह रहा आपके हाथ का लिखा हुआ मीमो, जो आपने सिगनल पर स्वयं ही आ कर मुझे दिया था। फकीर बाबा भौंचक्के रह गये।

ऐसी चमत्कारी घटना से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि फकीर बाबा को इन सिद्धियों का अनुभव इसलिए हो रहा था कि वह ईश्वर के असली रूप को पहचान जायें। इसी कारण जैसा कि हम अगले

अध्याय में देखेंगे कि फकीर बाबा के सम्बन्ध में हर प्रकार की चमत्कारी घटनाएँ ऐसी घटीं, जिनसे हजारों लोगों को लाभ पहुँचा। ऐसी घटनाओं का उल्लेख इसलिए करना भी जरूरी है कि एक सिद्ध पुरुष में ईश्वर की ऐसी शक्ति काम करती है, जो सभी को लाभ पहुँचाती है। फकीर बाबा के रूप के प्रकट होने से न ही केवल उन लोगों ने अपनी अपनी कठिनाइयों में सहायता ली है, जो उनको जानते हैं और उनमें विश्वास रखते हैं, किन्तु कुछ ऐसे लोगों ने भी लाभ उठाया है जिन्होंने पहले फकीर बाबा का नाम तक भी नहीं सुना था। इस रहस्य का कारण अगले अध्यायों में स्पष्ट हो जायेगा।

अन्य चमत्कारी घटनाएँ तथा सच्चा ज्ञान

फकीर बाबा सद् पुरुष हैं, बड़ी-बड़ी कठिनाइयों में भी वे कभी सच्चे मार्ग से पीछे नहीं हटे। उन्होंने अपने गुरु होने का कभी भी दुरुपयोग नहीं किया और न ही गुरुपने को कभी धन कमाने का साधन बनाया। इसमें तनिकमात्र भी सन्देह नहीं कि उनके जीवन में अनेकों विचित्र चमत्कारी घटनाएं घटी हैं। उनके अनुयायी तो प्रतिदिन विचित्र चमत्कारी घटनाओं का अनुभव करते हैं और उनकी अनुपस्थिति में उनके रूप के साक्षात दर्शन करते हैं। फकीर बाबा इन चमत्कारी घटनाओं के घटने को झूठा नहीं बतलाते उनके अनुसार ऐसी घटनाएँ घटती हैं, परन्तु वह ऐसी घटनाओं को बहुत महत्व नहीं देते। उसका कारण यह है कि वह तो उस अवस्था को प्राप्त कर चुके है जो चमत्कार से परे है। वे कभी अपने अनुयायियों को भुलावे में नहीं रखना

चाहते और उन्हें स्पष्ट बता देते हैं कि वह स्वयं कहीं नहीं जाते, जो लोग उनके रूप को देखते हैं वह उनके अपने मन की शक्ति तथा विश्वास के कारण ही होता है। फिर भी मैं यहाँ पता बता देना ठीक समझता हूँ कि फकीर बाबा के प्रकट होने की घटनाएँ बहुत ही विचित्र तथा आकर्षक हैं। ऐसी घटनाओं की कोई वैज्ञानिक या डाक्टरी व्याख्या नहीं दी जा सकती और न ही ऐसी घटनाओं को अन्धविश्वास पर ही आधारित माना जा सकता है। इसका कारण यह है कि जिन लोगों को फकीर बाबा का रूप भयंकर मुसीबतों के समय प्रकट हुआ और अब भी हो रहा है, वे सभी अनपढ़, गँवार या अन्धविश्वासी नहीं है। उनमें से अधिकतर पढ़े लिखे विद्वान डाक्टर, इन्जीनियर और ख्याति प्राप्त व्यक्ति भी हैं। मुझे व्यक्तिगत रूप में फकीर बाबा के निकट रहने तथा उनकी अनुपस्थिति में भी उनकी उपस्थिति को अनुभव करने के कई अवसर प्राप्त हुए हैं। मेरे मन में रूप के प्रकट होने के प्रति यदि कोई सन्देह होगा भी, वह भी १९७२ की एक घटना के बाद जाता रहा। यह १९७२ की घटना है। फोरेस्ट वर्जीनिया के एक विख्यात (जो फकीर बाबा के भक्त हैं और जिनका पूरा परिवार फकीर बाबा को परम सद पुरुष मानता है) विलियम मेकेब ने अपने विशाल तथा सुन्दर घर में एक और बहुत बड़ा बेडरूम बनवाया और उसमें सर्व प्रथम सोने के लिए मुझे (न्यूमोर्ट-न्यूज वर्जीनिया से जो फोरेस्ट से २०० मील दूर है) न्यौता दिया। मैं उस समय वहाँ एक कालेज में पढ़ा रहा था। मैं और मेरी पत्नी शाम को ५ बजे के बाद वहाँ से रवाना हुए और रात के दस बजे डाक्टर मेकेब के घर पहुंचे। उस समय डाक्टर मेकेब अपने एक मरीज को देखने के लिए गये हुए थे। मैं ५ घण्टे कार चलाने के कारण थका हुआ था इसलिए डाक्टर मेकेब की सुन्दर तथा विदुषी पत्नी ऐनिस ने हम दोनों को अपने नये कमरे में ले जा कर हमारा सामान वहाँ रखा और कहा कि हम अब सो जायें और डाक्टर मेकेब को प्रातःकाल ही मिलें। दूसरे दिन प्रातः को

जब सब बच्चे नाश्ता ले कर अपने-२ स्कूलों में चले गये तो डाक्टर मेकेब ने बड़ी गम्भीरता से कहा 'डाक्टर शर्मा, क्या आप रात को आराम से सोये ? मैंने उत्तर दिया 'हां विलियम बहुत आराम से सोये हम दोनों, तुम्हारे घर का यह भाग बहुत ही सुन्दर है' विलियम मेकेब थोड़ी देर चुप रहने के बाद फिर बोला 'क्या आप रात को दो बजे मेरे कमरे में तो नहीं आये जहां मैं रात को सो रहा था ?' मैं चकित रह गया और बोला, नहीं ! नहीं तो, मैं तो थका हुआ होने के कारण गहरी नींद में सो रहा था उस समय। रात को दो बजे भला मैं क्यों आता तुम्हारे कमरे में '

इस पर विलियम थोड़ा मुस्करा कर बोला, 'डाक्टर शर्मा ! मुझे बावरा मत समझो। मैं सौगन्ध खा कर कहता हूं कि रात को दो बजे के लगभग आप मेरे कमरे में आये, आप मेरे कमरे में पड़ी हुई मेज पर बैठ गये आपने प्राणायाम किया और फिर २० मिनट तक समाधि लगाई। मैं सोच रहा हूँ ? परन्तु वह स्वप्न नहीं था। मैं अपने बिस्तर से उठा साथ वाले गुसलखाने से जा कर एक गिलास पानी भर लाया। वह पानी पिया और गिलास को कमरे की छोटी मेज पर रख दिया। फिर देखा, आप गहरी समाधि में थे। मैंने भी ध्यान लगाने की कोशिश की। फिर आंख खोली, आप तब भी समाधि में थे, मैं आपको देखता रहा। फिर आप उठे और क्षण भर मे अदृश्य हो गये और मैं देखता रह गया। प्रातःकाल को जब उठा तो देखा कि वह गिलास जिसमें मैंने पानी पिया था उसी मेज पर ही था जिस पर मैंने उसे रात को रखा था। इसका मतलब यह है कि जो कुछ मैंने रात को देखा था वह स्वप्न नहीं था, सत्य था। आप कहते हैं कि आप सो रहे थे उस समय तो बताइए डाक्टर शर्मा, जो रात को मेरे कमरे में आया, वह कौन था ?'

एक पढ़े लिखे विद्वान तथा विख्यात डाक्टर के मुँह से ऐसी बातें सुन कर मैं भौंचक्का रह गया और तब मुझे एक दम फकीर बाबा का

ध्यान आया और मुझे पक्का विश्वास हो गया कि फकीर बाबा के ये वचन कि प्रकटीकरण मन की शक्ति के कारण ही होता है, शतप्रतिशत सत्य हैं। क्योंकि मैं डाक्टर विलियम मेकेब को रात के समय नहीं मिल सका था उनकी प्रबल इच्छा मुझे मिलने की थी इसलिए रात के समय उनकी मन की शक्ति ने मेरे रूप को बना लिया। इस घटना के बाद मुझे तनिकमात्र भी सन्देह नहीं रहा कि फकीर बाबा का रूप एक को नहीं बल्कि सैकड़ों व्यक्तियों को प्रकट होता हैं। मैं तो साधारण व्यक्ति में, वह तो सद्पुरुष है। फकीर बाबा का रूप विचित्र तथा भयंकर परिस्थितियों में लोगों को प्रकट ही नहीं होता बल्कि उनको मुसीबतों से बचाता भी है और उनकी मनोकामनाएँ भी पूरी करता है। एक ऐसी विचित्र घटना जो दहली में घटित हुई, उसकी सूचना फकीर बाबा को मेरे सामने ही दी गई। कुछ वर्ष पहले की बात है, फकीर बाबा देहली में श्री एच० सी० गुप्ता के घर सत्संग दे रहे थे, सत्संग के पश्चात् सब व्यक्ति बारी-२ से फकीर बाबा के पास आ कर उनके चरण छू कर आशीर्वाद ले रहे थे। वे सभी फल आदि भेंट कर रहे थे और साथ ही मानवता मन्दिर के लिए एक, दो या पाँच रुपये की भेंट भी दे रहे थे। सभी को ट्रस्ट की ओर से रसीद भी दी जा रही थी। फकीर बाबा अपने लिए उसमें से एक पैसा भी नही लेते।

जब लगभग सभी सत्संगी आशीर्वाद ले कर जा चुके थे एक गरीब सा दिखने वाला अधेड़ व्यक्ति आगे बढ़ा और फकीर बाबा के पाँव छू कर ५० रुपये उनके चरणों में रख दिये। फकीर बाबा ने जब ५० रुपये देखे तो बडी नम्रता से बोले, 'भले पुरुष ! तुम इतना धन मुझे क्यों दे रहे हो ? तुम्हारी माली हालत अच्छी नहीं लगती इस धन को तुम अपने परिवार पर खर्च क्यों नहीं करते ? देखो भाई, सबसे बड़ा धर्म है अपने परिवार का अच्छी तरह से पालन पोषण करना। तुम यह धन वापिस ले जाओ।' अधेड़ व्यक्ति नम्रता से बोला, 'ऐ मेरे मालिक ! मैं केवल इसी भेंट से ही आपकी उस अपार दया का बदला

देने की कोशिश कर रहा हूँ जो आपने मेरे ऊपर पिछले सप्ताह में की। दयालु मालिक, आपने मेरे घर की आग बुझाई।' यह बात सुन कर बोलती। बाबा ! वह झूठ क्यों बोलेगी। बाबा ! यह घटना पिछले सप्ताह की हैं। मैं अपनी नौकरी पर गया हुआ था मेरी पत्नी घर पर अकेली थी। मेरे पड़ोसी के घर आग लग गई। यह आग ऐसी भंयकर थी कि सारा का सारे घर जल गया और आग मेरे घर के पिछले कमरे तक पहुँच गई। मेरी पत्नी आग की लपटों को देख कर डर गई। वह बिलकुल बेबस थी। मैं आपका चित्र सदा अपने कमरे में लगाये रखता हूँ। मेरी पत्नी उस कमरे में जा कर आपके चित्र के सामने खड़ी हो गई और रो रो कर चित्र से प्रार्थना करने लगी कि आप उसकी सहायता को आयें। उसी समय चित्र से प्रकाश निकला और उस प्रकाश में से आप निकले और बाल्टी उठा कर उसमें पानी भर-भर कर आग को बुझाने लगे और कुछ क्षणों में आग बुझ गई। आग के बुझाने के बाद आप अदृश्य हो गये, मेरी पत्नी आपका धन्यवाद भी न कर सकी। अब मैं यह तुच्छ भेंट आपके पास ले कर आया हूं। बाबा ! मुझे निराश मत कीजिये।' फकीर बाबा ने बड़ी नम्रता से कहा 'मेरे प्यारे ! इन सब बातों के बारे में मैं कुछ नहीं जानता। भले आदमी ! मैंने तो जीवन मे तुम्हें पहली बार देखा है। मैं तो तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का नाम भी नहीं जानता। भाई ! मैंने तुम्हारे घर की आग नहीं बुझाई। मुझे इस भ्रम में पैसे मत दो कि मैंने तुम्हारे घर की आग बुझाई है।।'

फकीर बाबा के आशीर्वाद से सैकड़ों ऐसी स्त्रियों को पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके विवाह के कई वर्ष बाद तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। इन स्त्रियों में से एक स्त्री ऐसी भी थी जिसके जीवन में कभी मासिक धर्म नहीं हुआ था। ऐसी स्त्री को भी फकीर बाबा के प्रसाद तथा आशीर्वाद से पुत्र पैदा हुआ। एक दूसरी महिला ऐसी थी जिसकी आयु पचास वर्ष के ऊपर थी और जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया था

और उसकी अभी सन्तान नहीं हुई थी। फकीर बाबा के प्रसाद तथा आशीर्वाद से उस महिला को भी पुत्र उत्पन्न हुआ। फकीर बाबा ने इस घटना की सूचना अमेरिका से आये हुये विख्यात ए० आर० ई० के ग्रुप को दी, जो उस समय भारत का भ्रमण करते हुए देहली में फकीर बाबा के दर्शन के लिए आया हुआ था। यह बात सन् १९६९ की है। इस ग्रुप में से एक व्यक्ति ने फकीर बाबा से प्रश्न किया। 'your Holiness ! हम यह अनुभव करते हैं कि कुछ सिद्धियाँ ऐसी होती हैं, जो केवल आध्यात्मिक लोगों को ही प्राप्त होती हैं सभी को नहीं। परन्तु फिर भी कभी-कभी यह देखने में आया है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिनमें आध्यात्मिकता न होते हुये भी मानसिक सिद्धियाँ होती हैं। आपका इन विचित्र सिद्धियों तथा आध्यात्मिक जीवन के सम्बन्ध में क्या विचार है ?'

फकीर बाबा ने उत्तर दिया, 'क्या मैं आपसे एक प्रश्न कर सकता हूँ ? क्या किसी मनुष्य के लिए यह सम्भव है कि वह एक दूसरे व्यक्ति को आध्यात्मिक विकास में सहायता दे ? जहाँ तक मन की शक्ति का सम्बन्ध है मैं यह स्वीकार करता हूँ कि वह जरुर है। किन्तु उस मानसिक शक्ति का प्रभाव केवल उन्हीं लोगों पर होता हैं जो दृढ़ विश्वास रखते हैं। मैं इस विषय मैं आपको एक सच्ची घटना का उदाहरण देता हूँ। 'कुछ वर्ष पहले की घटना है कि मोतीलाल नामक एक धनवान व्यक्ति (जो इन्दौर में रहता था) की पत्नी को डाक्टरों ने बता दिया था कि उसके कभी बच्चा नहीं होगा। जब मैं इन्दौर का दौरा कर रहा था, उस समय सेठ मोतीलाल तथा उसकी पत्नी मेरे पास आये। उस समय मोतीलाल की आयु ५५ वर्ष की थी और उसकी पत्नी की आय ५० वर्ष की। पत्नी ने रो-रो कर मुझ से प्रार्थना की कि मैं उसे पुत्र होने का आशीर्वाद दूँ। मैंने उसे एक आम देते हुए कहा, 'यह आम खा मालिक ने चाहा तो तुम्हें पुत्र पैदा हो जायेगा।' उस महिला ने आम लेकर खा लिया। कुछ दिन के बाद वह अपने डाक्टर के पास

जा कर बोली कि अब उसे अवश्य लड़का होगा क्योंकि उसने बाबा का प्रसाद खा लिया है। वास्तव में ही एक वर्ष के पश्चात् उस महिला के लड़का हुआ और मैंने उसका नाम श्री भगवान रखा। और अब एक बात और भी सुनो ! मेरी अपनी लड़की के विवाह को चौदह वर्ष से भी अधिक हो गये हैं, उसकी अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई। मैंने एक बार नहीं बीसियों बार उसे उसी भाव से प्रसाद दिया जैसे मैंने मोतीलाल की पत्नी को दिया था। परन्तु मेरी लड़की के कोई सन्तान नहीं हुई। इसका कारण यह है कि मन की शक्ति की सफलता का मूल कारण मनुष्य का अपना ही विश्वास है। मनुष्य की इच्छाशक्ति काम अवश्य करती है, किन्तु वह सफल तभी होती है जब विश्वास दृढ़ होता है। जहाँ पर विश्वास डगमगा जाता है, वहाँ सन्त भी सहायता नहीं कर सकते।

यहाँ पर एक और उदाहरण देना भी उचित रहेगा। यह उदाहरण एक सिक्ख पति पत्नी का है, फकीर बाबा से बार-बार प्रार्थना की कि बाबा उन्हें पुत्र होने का आशीर्वाद दें। उन्होंने फकीर बाबा को यह भी बताया कि ज्योतिषियों ने उन्हें बताया कि उनकी कुण्डली में सन्तान नहीं लिखी। इस बात को सुन कर फकीर बाबा बोले 'जब ज्योतिषियों ने कह दिया है कि तुम्हारे भाग्य में सन्तान नही है तो तुम मेरे पास क्यों आये ? ज्योतिषी झूठे नहीं हो सकते। इसलिए भले लोगों ! अपने भाग्य को स्वीकार करके शक्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करो इस पर सिक्ख सज्जन की पत्नी फूट-फूट कर रोने लगी और बोली ,बाबा मुझे पुत्र चाहिए ! बाबा मुझे पुत्र होने का प्रसाद दो और आशीर्वाद दो। आप सद पुरुष हो बाबा आप सब सम्भव कर सकते हो।' फकीर बाबा दयालु तो हैं ही किसी का दुःख नहीं देख सकते उस महिला के दुःख से प्रभावित हो कर बोले, देखो बेटी ! तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है; परन्तु जिद कर रही हो। मैं तुम्हें प्रसाद दूँगा, तुम्हारे बच्चा तो हो जायेगा, परन्तु बच्चा होने के बाद तुम्हारी मृत्यु

हो जायेगी । क्या तुम मरने के लिए तैयार हो ? उसी समय स्त्री की पुत्र समाप्त करने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि उसको मौत की भी परवाह न रही । उसने कहा, 'बाबा ! मुझे पुत्र चाहिए मैं मर भी जाऊँ तो मुझे इसका लेशमात्र भी दुःख नहीं होगा मैं मरने से नहीं डरती । मैं मर जाऊँगी लेकिन मेरा लड़का तो रहेगा, मुझे लड़का चाहिये बाबा ।

फकीर बाबा ने उसे प्रसाद दिया और कुछ समय बाद वह महिला गर्भवती हो गई । उसके गर्भवती होने के समाचार से सिक्ख सज्जन को इसलिए विशेष प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि वह जानता था कि पुत्र पैदा होने के बाद उसकी पत्नी चली जायेगी । वह अपनी पत्नी के मरने का बिचार करके कांप जाता । जब बच्चा पैदा होने में केवल तीन महीने ही बाकी रह गये तो सिक्ख सज्जन फकीर बाबा के पास गया और रो-रो कर बोला दयालु बाबा ! मेरी पत्नी को मरने मत दो । बाबा ! इसे बचा लो मैं जीवन भर आपका आभारी रहूंगा । मेरी पत्नी को बचा लो । आशीर्वाद दो बाबा कि मेरी पत्नी और बच्चा दोनों बच जायें ।'

दया के भण्डार फकीर बाबा उस सज्जन दुःख नहीं देख सके और और बोले 'भले पुरुष सुनो ! तुम्हारी पत्नी मरेगी नहीं, परन्तु उसके लिए शर्त माननी पड़ेगी ।'

सिक्ख सज्जन नम्रता से बोले 'बाबा ! मैं कोई भी शर्त मानने के लिए तैयार हूँ । मेरी पत्नी को बचा लो बाबा !'

फकीर बाब बोले 'देखो आज से और जब तक तुम्हारा बच्चा न हीं होता तुम रोज मुझे १२ बजे से १ बजे के बीच जहाँ पर भी मैं होऊँ मुझ से मिलने आया करो । उसमें नागा नहीं होनी चाहिए । रोज आना पड़ेगा चाहें पाँच मिनट के लिए ही क्यों न आओ ।'

वह सिक्ख सज्जन उस दिन के बाद प्रतिदिन दोपहर को १२ से १ बजे के बीच में दयालु फकीर बाबा के दर्शन करने के लिए जाने लगा । आँधी हो या तूफान हो, गर्मी हो, लू हो, कुछ भी हो उस

सज्जन ने फकीर बाबा की आज्ञा का उल्लंघन एक दिन भी नहीं किया। जहां भी फकीर बाबा होते वह वहीं जाता और रोज उनका आशीर्वाद लेता। तीन महीने के बाद उसके सुन्दर लड़का पैदा हुआ और उसकी पत्नी मरी नहीं।

अब प्रश्न यह होता है कि फकीर बाबा ने उस सज्जन को प्रतिदिन अपने पास आने को क्यों कहा ? आशीर्वाद तो वह इस शर्त के बिना भी दे सकते थे। फकीर बाबा का कहना है कि चमत्कार मनुष्य के अपने ही मने की शक्ति के कारण घटित होते हैं और मन की शक्ति मन को एकाग्र करने से बढ़ती है और अनुशासन मन को एकाग्र करने में सहायता देती है। इसलिए अनुशासन का जीवन में बहुत महत्व है। प्रतिदिन फकीर बाबा के दर्शन करने से सिक्ख सज्जन को समय पर जाने का अनुशासन रखना पड़ा इससे उसका मन एकाग्र हो गया और उसके मन की शक्ति को सहायता मिली। अगले अध्याय में चमत्कारों की प्राकृत व्याख्या दी जायेगी। इससे पहले कि हम फकीर बाबा के उपदेशों का दर्शनिक तथा वैज्ञानिक महत्व बतलायें एक और आकर्षक चमत्कार का उदाहरण यहाँ बताना उचित होगा।

यह घटना लगभग २५ वर्ष पहले की है। फकीर बाबा दक्षिण भारत में हैदराबाद के पास कहीं सत्संग करा रहे थे। उनके सतसंगियों में बीरगवा महादेव नाम का एक धनवान व्यापारी भी उपस्थित था। वह अपने देश का माना हुआ व्यापारी था। उसके साथ-साथ उसके लड़के (जो प्रौढ़ थे और जो उसका व्यापार भी सम्भालते थे) भी वहाँ आये हुए थे। बीरगवा महादेव बहुत सी बीमारियों से पीड़ित था। डाक्टरों के पास उसकी उन बीमारियों का कोई इलाज नहीं था और वह मरने के निकट था। सत्संग समाप्त होने के बाद वह फकीर बाबा के पास आ कर बोला, 'ऐ मेरे मालिक ! मैं अपने पिछले जन्म के बुरे कर्मों के कारण इस जन्म में बहुत सी भयंकर बीमारियों से घिरा हुआ हूँ। मैंने सुना है कि सन्त हमें पाप कर्मों से बचा सकते हैं।

आप सन्त ही नही सत्तपुरुष भी हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे बुरे कर्तों का नाश कीजिये।' दयालु फकीर बाबा ने उत्तर दिया, 'बोरगवा महादेव ! मैं तुम्हारे बुरे कर्मों का नाश कर दूंगा, तुम स्वस्थ हो सकते हो परन्तु उसके बदले में तुम्हें कुछ मुझें दान में देना होगा।'

बोरगवा महादेव का चेहरा खिल उठा। उसने अपने मन मैं सोचा कि फकीर बाबा अपनी संस्था के लिए, एक दो लाख रुपये का दान चाहते होंगे और एक, दो या चार लाख रुपया उसके लिए कुछ भी नहीं था। उसने प्रसन्न हो कर अपने लड़कों की ओर देख और यह जानना चाहा कि वे अपने पिता के स्वास्थ्य के लिए सहमत थे या नहीं। बेटों ने मुस्करा कर अपनी अनुमति दिखाई। बोरगवा महादेव ने प्रश्न हो कर कहा 'आप मालिक हैं, आज्ञा दीजिये महाराज ! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।'

फकीर बाबा ने कहा 'तो जल्दी सेपुरोहित को बुलाओ।' सत्संगियों की उपस्थिति में पुरोहित को बुलाया गया। फकीर बाबा ने बोरगवा महादेव को कहा, 'अब तुम जल हाथ में लो और पुरोहित के मन्त्र पढ़ने के साथ-साथ अपने सभी बुरे कर्मो का संकल्प मुझे दे दो। मैं तुम्हारे सभी पाप कर्म अपने पर ले लूंगा और बाकी तुम्हारे अच्छे कर्म तुम्हें सभी बीमारियों से मुक्त कर देंगे।'

फकीर बाबा के इन शब्दों से सभी सत्संगी सन्नाटे में आ गये और बोरगवा महादेव तो भौंचक्का रह गया। उसने तो सोचा था कि बाबा धन का दान मागेंगे, परन्तु उन्होंने तो ऐसा दान माँगा था, जो आज तक किसी ने नही माँगा था। बहुत से सत्संगियों को भय लगा कि इससे बोरगवा बहादेव के सभी रोग आप को लग जायेंगे, वे सभी चिल्लाये 'ऐसा मत करो बोरगवा महादेव ! ऐसे स्वार्थी मत बनो। अपने रोगों को बाबा को मत दो। परन्तु दयालु बाबा ने किसी की एक भी नहीं सुनी। पुरोहित द्वारा मन्त्र पढ़ा गया और बोरगवा

महादेव के सभी के बुरे कर्मों का संकल्प बाबा को दे दिया गया। इस घटना को लिखते हुए मेरे स्वयं के रोंग टेढ़े हो रहे हैं और मुझे भगवान बुद्ध का एक दम ध्यान आ रहा है। एक बार अति दयालु भगवान बुद्ध ने संसार के लोगों को अनेक दुखों से त्रस्त पा कर यह बात कही थी 'यदि मैं संसार के सभी जीवों के बुरे कर्म अपने पर ले कर उनको दुःखों से मुक्त कर सकूं तो मैं करोड़ों वर्षों तक नरक में रहने के लिए भी तैयार हूं।'

आश्चर्य की बात है कि बोरगवा महादेव तत्काल मैं ठीक हो गया। उसकी सभी बीमारियां न जाने कहाँ अदृश्व हो गई। वह बीस वर्ष और जिया, कभी बीमार नही हुआ और अन्त में स्वाभाविक मृत्यु से मरा। बोरगवा महादेव के बेटे सदा बाबा के आभारी रहेंगे।

अध्याय के आरम्भ में यह बताया गया है कि फकीर बाबा चमत्कारों को बहुत महत्व नहीं देते क्योंकि मानव जीवन का लक्ष्य तो है आत्तानुभूति तथा ईश्वरानुभूति जो चमत्कारों से परे है। किन्तु करोड़ों में से कोई बिरला ही इस लक्ष्य पर पहुंचता है। अधिकतर लोग तो सांसारिक लाभ चाहते हैं। किसी को पुत्र की इच्छा रहती है किसी को धन की, किसी को पदवी की तो किसी को ख्याति की जब लोगों के मन की इच्छाएं उनके अपने विश्वास के कारण किसी सन्त, महात्मा अथवा गुरु के माध्यम से पूर्ण हो जाती है तो वे उन्हें चमत्कार ही लगती है और इन चमत्कारों में उनका विश्वास बढ़ जाता है। संसार का ऐसा कोई भी कोना नहीं जहां लोग चमत्कारों से आकर्षित न होते हो। सभी इन चमत्कारों के बन्धन में है उससे ऊपर नहीं उठे। सच्चे सन्त का यह स्वभाव होता है कि यह अपने सत्संगियों के दुःखों को दूर करे। सच्चे सन्त तथा सदपुरुष होने के नाते फकीर बाबा अपने सत्संगियों को उनके विश्वास के अनुसार उनकी इच्छापूर्ति के लिए आशीर्वाद इसलिए देते हैं कि किसी भी व्यक्ति की श्रदा टूट न जाय। किन्तु वह सदैव इस बात पर भी जोर हैं कि इच्छा करते समय भी

मनुष्य को अपना मन तथा विचार शुद्ध रखने चाहिए । कभी दूसरों की बुराई करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए । उनके अनुसार यदि इच्छा सच्चे और शुद्ध मन से की जाये तो अवश्य पूरी होती है । जब वह किसी को आशीर्वाद देते हैं सच्चे तथा पवित्र मन से देते हैं इसलिए ही तो लोगों की इच्छाओं की पूर्ति हो जाती हैं । जब उनकी इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है तो ऐसे लोग श्रद्धा तथा विश्वास के कारण उनका सत्संग सुनने आते हैं । लगातार सत्संग सुनने के कारण उनमें धीरे-२ परिवर्तन होने लगता है और वह आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने लगते हैं । सत्संग में निश्चित समय पर पहुँचने के लिए सत्संगियों को जीवन में भी अनुशासन लाना पड़ता है और अनुशासन पर चलने वाला सत्संगी सत्संग का पूरा लाभ उठा सकता है । कहने का अभिप्राय यह है कि चमत्कारों का भी मनुष्य के जीवन में एक विशेष स्थान है ।

चमत्कारों की यह व्याख्या, कि मनुष्य का श्रद्धा, विश्वास तथा अनुशासन का पालन मन की शक्ति को बढ़ावा देते हैं और मन की शक्ति ही सब काम सिद्ध करती है, बड़ी सुन्दर और सन्तोषजनक है । इस व्याख्या से हम दूसरे धर्मों में घटने वाले चमत्कारों को भी ठीक तरह से समझ सकते हैं । हमारा धर्म के प्रति दृष्टिगोचर उदार हो जाता है । तब हम यह नहीं कह सकते कि किसी धर्म विशेष में ही विश्वास रखने से ही हमारा उद्धार हो सकता है । हम मानव धर्म को मान कर सभी धर्मों को श्रद्धा की दृष्टि से देख सकते हैं । जब हम सब धर्मों को एक ही ईश्वर की प्राप्ति के अलग-२ मार्ग समझ कर शान्ति पूर्वक अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं तो हम किसी भी धर्म के अनुयायी से घृणा नहीं कर सकते ।

अब मैं चमत्कारों की व्याख्या को और भी स्पष्ट करने के लिए दो उदाहरण और देना चाहुँगा । पिछले दो उदाहरणों में चमत्कार घटने की जो घटनाएँ घटीं उनमें फकीर बाबा स्वयं घटनास्थल पर उपस्थित थे और उन्होंने सत्संगियों के विश्वास को बढ़ावा दिया था ।

किन्तु बहुत से ऐसे उदाहरण भी हैं, जहाँ फकीर बाबा न तो घटना-स्थल पर उपस्थित थे और न ही उन्होने लाभ उठाने वाले व्यक्तियों के विश्वास को कभी बढ़ावा दिया था। किन्तु बहुत से ऐसे कुछ उदाहरण पिछले अध्यायों में पहले भी दिये जा चुके हैं। यहाँ मैं दो उदाहरण और दे रहा हूँ। इनमें से एक उदाहरण ऐसा है, जिसमें फकीर बाबा कैनेडा के एक भयानक जंगल में एक डाक्टर के सामने प्रकट हुए और दूसरी घटना का घटनास्थल भारत का एक छोटा सा कस्बा है जहाँ पर एक स्कूल मास्टर, जिसने फकीर बाबा का कभी नाम नहीं सुना था, ने उनके प्रकट होने से लाभ उठाया। ऐसे चमत्कारों की व्याख्या कुछ और ही होनी चाहिए।

यों तो अमेरिका, अफ्रीका, कैनेडा तथा अन्य कई देशों में फकीर बाबा के रूप के प्रकट होने की कई चमत्कारक घटनाएँ घटी हैं, किन्तु जिस चमत्कारक घटना का यहाँ वर्णन किया जायेगा वह बहुत ही रोचक है। यह घटना पंजाब के भूतपूर्व मंत्री तथा विख्यात डाक्टर जगजीत सिंह पंजाब सरकार से सम्बन्धित है। कुछ वर्ष पूर्व की बात है कि डाक्टर जगजीत सिंह सह पंजाब सरकार की ओर से विदेश के दौरे पर थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने इस रोचक घटना को होशियारपुर, मानवता मन्दिर में स्वयं ही बताया। डाक्टर जगजीत सिंह का कहना है कि वह कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ एक हेलीकौप्टर में कैनेडा के जगलों का निरीक्षण कर रहे थे। किसी कारण हेलीकौप्टर में कुछ खरीबी हो गई। आगे बढ़ना ठीक नहीं था सो जहाज को शीघ्र ही एक भयानक जंगल में उतारा गया। वह जंगल इतना भयानक था कि सभी उसको देख कर डर गये। किसी प्रकार भी वहाँ किसी से सहायता पाना असम्भव था। सभी लोग इतना बेवश थे कि किसी को इस मुसीबत से बचने का कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था। डाक्टर जगजीत सिंह विशेष रूप से परेशान थे क्योंकि वह अपने देश तथा अपने परिवार से इतनी दूर थे। उन्होंने भारत छोड़ने से पूर्व कभी

इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि विदेश में जाकर उनका अन्त इस प्रकार होगा। इस परेशानी में वह जंगल में चलने लगे और अपने साथियों से कुछ दूर चले गये। उनका मन बहुत ही अशान्त था। उनका फकीर बाबा में पूर्ण विश्वास था। एक दम उन्हें बाबा का ध्यान आया। उनके चेहरे पर थोड़ी रौनक आ गई। उन्होंने हाथ जोड़कर श्रद्धा पूर्वक फकीर बाबा का ध्यान करके प्रार्थना की 'हे फकीर बाबा! हम इस भयानक जंगल में फँस गये हैं। यहाँ से बच निकलने का कोई उपाय नहीं। बाबा, तुम दयालु हो हमारी सहायता करो। हमें इस संकट से बचाओ।

जगजीत सिंह ने बताया कि अचानक उनके सामने प्रकाश हुआ और उस प्रकाश में से फकीर बाबा निकले और बोले "जगजी सिंह! चिन्ता मत करो। इसी स्थान पर ही अपने साथियों के साथ डटे रहो। ठीक आधे घण्टे बाद एक दूसरा हेलीकौप्टर आयेगा और आप सबको सुरक्षित स्थान पर ले जायेगा।

(शेष अगले अँक में)

सूचना

माह जुलाई अगस्त का एक ही अंक होगा पाठकगण इन्तजार न करें।

—प्रकाशक

क्षमायाचना

गत माहों में समय से पत्रिका का प्रकाशन न हो सका इससे हमारे पाठक भाइयों को जो कष्ट हुआ उसके लिए क्षमा चाहते हैं।

—प्रकाशक

सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण, जैसा कि आपको विदित है कि हम माह अप्रेल ८७ में महारामायण पूरी कर चुके हैं उसके बाद हमने आपसे राधा-स्वामी योग छापने का इजहार किया था लेकिन हम अभी तक ऐसा नहीं कर पाये, हम माह मई एवं जून की पत्रिका एक साथ आपके पास भेज रहे हैं। जिसमें हजूर मानव दयाल जी महाराज के, हजूर फकीर चन्द जी महाराज के प्रति जो गूढ़ अनुभव हैं। दिये गये हैं। हमें आशा है यह हमारे सभी सतसंगी भाइयों को अति लाभप्रद होंगे।

हमें इस पत्रिका को छापने में अति देरी हुई उसकी वजह यह है कि हमारे पास इस पत्रिका का कोई फन्ड नहीं है और हमें अपने ग्राहक भाइयों से समय पर इसका चन्दा उपलब्ध नहीं होता है। बहुत से भाई तो ऐसे हैं जिन्होंने ३-४ वर्ष से चन्दा भेजा ही नहीं और हमें मजबूर होकर पत्रिका बन्द करनी पड़ी व पत्रिका को व्यर्थ का नुकसान वहन करना पड़ा।

धनराशि की कमी के कारण ही हमें जुलाई एवं अगस्त का अंक भी एक ही करना पड़ रहा है। अतः आप लोग इन्तजार न करें।

यदि आप चाहते हैं कि इस पत्रिका का प्रकाशन चलता रहे तो हमारी आप से यही प्रार्थना है कि आप इस पत्रिका के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर चन्दा भिजवाने की व्यवस्था करें। ताकि हम आपकी सेवा करने में व गुरु महाराज के प्रवचनों को ज्यादा से ज्यादा फैलाने में सफल हो सकें।

– सम्पादक

धन्यवाद !

श्रीमती कान्ता शर्मा 'गौरव' आदर्शनगर व्यावर ने श्री वीरेन्द्र द्वारा भेजे गये ५१ रु० मनुष्य वनो की सहायतार्थ भेजे हैं।

२१) श्रीमती सावित्री देवी गार्गीया ७ खाई, लेन्डबाजार, अजमेर।

एवं श्री पुत्तु लाल पूसे लाल जी कन्नौज ने अपने पुत्र अवधेश कुमार के विवाहोत्सव पर ११) रु० दान स्वरूप भेजा है। मालिक से कामना है कि वह नवदम्पति को दीर्घायु करे एवं धनधान्य से सम्पन्न करे।

१००) रु० बद्रीनरायण पूरालाल चौहान, ढावला हर्दू उज्जैन एवं १००) श्री C. Ram Chand, Secundrabad ने हजूर फकीर चन्द्र जी महाराज की शिक्षा के प्रचार हेतु भेजे हैं। इस नेक कार्य हेतु हम मालिक से उनकी उन्नति की कामना करते हैं।

हम श्री आई० एस० मलिक लुधियाना के अति आभारी हैं जो हमें हर माह १००/- का अनुदान भेजकर पत्रिका के संचालन महान सहयोग दे रहे हैं हम मालिक से उनकी मंगल कामना करते हैं।

———

'मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचारपत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
सम्पादक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

नांक १५ सित०, १९८६

सुधा मित्तल

प्रकाशक के हस्ताक्षर